Chapter-6

षष्ठ अध्याय

इतिहास से प्रेरित - सामाजिक और सांस्कृतिक

चेतना प्रधान कृतियाँ

शकुन्तला, पत्रावली, यशोधरा,
कुणाल- गीत, काबा और कर्बला,
विष्णुप्रिया, रत्नावली,

अंतरंग विवेचन = कथावस्तु
वस्तुगत आधार
मौलिकता और आधुनिकता.

अभिव्यक्ति पक्ष = भाषा (मुहावरें, लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ),
संवाद योजना, रस योजना, बिम्ब विधान,
अलंकार विधान, छन्द विधान.

307

कविवर मैथिलीशरण गुप्त भारतीय संस्कृति के अनन्य प्रस्तोता हैं. यहाँ की सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना उनकी रग रग में व्याप्त है. अतएव वह उनके काव्य में सर्वत्र अभिव्यक्त हुई है. उसे काव्यात्मक रुप देने का जैसा कवि-कर्म उन्होंने किया है वह उन्हें जनजीवन का कवि ही नहीं बनाती, हिन्दी साहित्य में उनके विशिष्ट स्थान का भी प्रमाण प्रस्तुत करती है. इस अध्याय में हम उनकी इसी प्रवृत्ति- प्रेरक रचनाओं का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं.

कथावस्तु

शकुन्तला

यह गुप्तजी का नारी-प्रधान काव्य है. " शकुन्तला " में कवि ने कालिदासकृत " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " की कथावस्तु को अपनाया है. शकुंतला की मौलिकता संक्षेपण और उपस्थितीकरण में है. ग्यारह खण्डों में वर्णित इस रचना में स्वतंत्रता का आभास मिलता है. गुप्तजी ने कालिदास के प्रसिद्ध नाटक को नए ढंग से रखा है.

इसके " उपक्रम " में शकुन्तला के चरित्र का वर्णन हुआ है. " जन्म और बाल्यकाल " में उसके जन्म और कण्व के आश्रम में उसके लालित-पोषित होने का वर्णन किया है. " दर्शन " में दुष्यंत एवं शकुंतला की प्रथम भेंट का वर्णन हुआ है. " पत्र " में शकुंतला के प्रेम-पत्र की रचना का वर्णन है. " अवधि " में दोनों प्रेमियों विदा लेते हैं. " अभिशाप " में दुर्वासा के शाप की घटना नियोजित हुई है. " विदा " खण्ड में शकुन्तला की विदा प्रसंग का विवरण है. " त्याग " खण्ड में शापवश दुष्यंत ने शकुन्तला का त्याग किया. मुद्रिका की प्राप्ति होते ही राजा को शकुन्तला का स्मरण हुआ. " स्मृति " में राजा की विह्वलता का वर्णन है. " कर्तव्य " में दुष्यंत एवं कालनेमि का युद्ध वर्णन है. " मिलन " में दुष्यंत एवं शकुन्तला की भेंट होती है. दुष्यंत विजय प्राप्ति के बाद कश्यप एवं अदिति के आश्रम में दर्शन के लिए गया. वहाँ दोनों का पुनर्मिलन हुआ. इस प्रकार इस रचना का सुखांत हुआ है.

पत्रावली

" पत्रावली " ऐतिहासिक आधार पर लिखे गए सात पद्यात्मक पत्रों का संकलन है. इसमें चार पत्र पुरुषों द्वारा तथा तीन स्त्रियों द्वारा लिखे गए है. प्रथम पत्र में पृथ्वीराज ने राणा प्रताप के वीरोत्साह को उद्दीप्त किया है. दूसरे पत्र में राणा प्रताप ने उत्तर दिया है. तीसरा पत्र शिवाजी का है जो औरंगजेब के प्रति लिखा गया है. इसके द्वारा जजिया कर का विरोध किया गया है. चौथा पत्र औरंगजेब ने अपने पुत्र को अनुताप प्रकट करते हुए लिखा है. पाँचवा पत्र रानी सिसोदिनी ने महाराजा जसवंत-सिंह के नाम लिखा है. इसमें राजा के युद्धभूमि से लौट आने पर रानी के आक्रोश की व्यंजना हुई है. छठा पत्र अहिल्याबाई का राघोबा के प्रति है. इसमें अहिल्याबाई ने संदेश भेजा कि राघोबा का अभियान अनीति-मूलक है एवं विश्वासघात पर आश्रित है. अंतिम पत्र राजकुमारी रुपवती ने महा-राणा राजसिंह के नाम लिखा है. इसमें राजकुमारी ने प्रेम- याचना करते हुए धर्म-रक्षा की माँग की है. इन पत्रों में कवि ने राजपूतों, राजपूतस्त्रियों तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों की मनोवृत्तियों का चित्रण किया है. इन पत्रों में निजी पत्रों की सी तीव्रता एवं आत्मीयता नहीं है. फिरभी इन पत्रों का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है.

यशोधरा

" यशोधरा " नारी-प्रधान काव्य है. जिसमें गुप्तजी ने गौतम बुद्ध एवं उनकी पत्नी यशोधरा की जीवन झाँकी अंकित की है. " यशोधरा " के " शुल्क " में स्वयं गुप्तजी ने लिखा है- " भगवान बुद्ध और उनके अमृत तत्व की चर्चा तो दूर की बात है, राहुल-जननी के दो-चार आँसू ही तुम्हें इसमें मिल जायें तो बहुत समझना. और, उनका श्रेय भी " साकेत " की ऊर्मिला देवी को ही है, जिन्होंने कृपापूर्वक कपिलवस्तु के राजोपवन की ओर संकेत किया है. " [1]

1. यशोधरा- शुल्क, पृ. 5

309

" साकेत " के पश्चात् गुप्तजी ने " यशोधरा " में पुनः उपेक्षिता यशोधरा का वर्णन किया है. अर्थात्, इसमें कवि का लक्ष्य यशोधरा ही है. उन्होंने यशोधरा की पीड़ा को वाचा दी है एवं नारी की महत्ता की व्यंजना की है --

" दी न हो गोपे, सुनो, हीन नहीं नारी कभी,
भूत- दया- मूर्ति वह मन से, शरीर से । "[1]

इस काव्य का आरम्भ सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रमण से हुआ है एवं अंत बुद्ध के अमरत्व प्राप्ति से. जब वे नहीं है तब वह पति के लिए रोती है और राहुल के लिए गाती है।

कुणाल- गीत
========

इस प्रबन्धात्मक मुक्तक काव्य में पंचानवे गीत संकलित किए गए हैं. " यशोधरा " की रचना के पश्चात् कवि ने किसी सूरदास को गाते हुए देखा. यह देखकर गुप्तजी ने " कुणाल- गीत " की रचना करने का निश्चय किया. बुद्ध धर्म के व्यापक प्रचारक महाराज अशोक के पुत्र कुणाल की कथा भारत की एक प्रसिद्ध कथा है. विमाता तिष्यरक्षिता ने कुणाल को सीमा-प्रान्त में भेजदिया. वहाँ उसने राजनीतिक विद्रोह को शमित किया. कुणाल की पत्नी कांचनमाला भी उसके साथ थी. बादमें, विमाता ने राजा को यह आदेश भेजा कि कुणाल को अंधा कर दिया जाय. इा आदेशानुसार कुणाल को अंधा करके निष्कासित किया गया. वह अंधा होकर कांचनमाला के साथ भिक्षाटन के लिए निकल पड़ा. वह एक रात्रि को पाटलिपुत्र पहुँच गया. उसकी स्वर-लहरी से अशोक ने उसे पहचान लिया. पिता-पुत्र की भेंट हुई. अशोक के पुण्य से कुणाल को पुर्नदृष्टि प्राप्त हुई एवं पुत्र के अनुरोध से राजा ने विमाता के अपराध को क्षमा कर दिया। इस छोटी- सी घटना को लेकर गुप्तजी ने "कुणाल गीत " की रचना की है.

---

1. यशोधरा , पृ. 142

310

काबा और कर्बला
============

" काबा और कर्बला " दो छोटे-2 खण्डकाव्यों का संकलन है. इसकी घटना मुस्लिम इतिहास से संबंधित है. " काबा " की इकत्तीस स्फुट कविता-ओं में मुहम्मद पैगंबर के जीवन की घटनाओं का निरूपण हुआ है. कवि ने उनके सदुपदेशों का भी वर्णन किया है. " कर्बला " में उनके नाती हसन और हुसैन के बलिदान की कथा वर्णित है.

विष्णुप्रिया
========

गुप्तजी " रत्नावली " में मध्यकाल की पति- परित्यक्ता नारी का चरित्रोत्कर्ष और पुरुष का आध्यात्मिक विकास दिखाना चाहते थे. लेकिन यह कार्य " रत्नावली " में न हो पाया. तब इसका चित्रण गुप्तजी ने श्रीजयद-याल डालमिया के आग्रह से " विष्णुप्रिया " में किया. कवि ने " विष्णुप्रिया " में भक्त प्रवर चैतन्य महाप्रभु एवं उनकी पत्नी विष्णुप्रिया की जीवन झाँकी अंकित की है. " विष्णुप्रिया " में भी कवि ने " साकेत " और " यशोधरा " की तरह विष्णुप्रिया के उपेक्षित जीवन को प्रस्तुत किया है.

इस नायिकाप्रधान प्रबन्धकाव्य में कवि का लक्ष्य विशेषरूप से विष्णु-प्रिया के तप, त्याग, उसकी सेवा, निष्ठा तथा प्रेम और वियोग ही रहा है. विवाह के पश्चात् चैतन्य गया गये, वहाँ से आने के बाद उनका मन प्रभु भक्ति की ओर ही रहता था. इतना ही नहीं, एक दिन उन्होंने गृह को त्यागकर संन्यास ग्रहण किया. तब से विष्णुप्रिया, अपनी सास की सेवा करती थी एवं जैसे हो सकता था वैसे ही अपना जीवन व्यतीत करती थी. वैसे तो, विवाह के बाद, सास की सेवा का कार्य विष्णुप्रिया ही करती थी. लेकिन, उनके संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् उसके लिए सास के सिवा और कोई सहारा नहीं रहा. जब सास और चैतन्य ने भी इस संसार से विदा ली तब वह प्रभु- भक्ति करती रही. और अंत में चैतन्य की मूर्ति में लीन हो गई.

इस काव्य में भारतीय संस्कृति का चित्रण हुआ है. गुप्तजी के जीवन के इस अंतिम पुष्प से भारत के धर्म एवं आदर्श- प्राण समाज को प्रेरणा मिलती रहेगी.

रत्नावली
======

" रत्नावली " में कवि ने गीतियों के रुप में गोस्वामी तुलसीदास की पत्नी रत्नावली के बाल्यकाल, विवाह एवं विरहावस्था का वर्णन किया है. कृति के प्रारंभ में रत्नावली पति के लिए मंगल कामना करती है. वह स्वयं जीवन भर विलाप करती रहती है. लेकिन उसकी इच्छा यह है कि प्रियतम को राम का प्रेम प्राप्त हो. वह उनके जन्म को सफल करना चाहती है. रत्नावली का परिवार उदार था. तुलसीदास का जन्म मूल-नक्षत्र में हुआ था. इसलिए बचपन में उनके माता- पिता ने उनका त्याग कर दिया. युवक होने पर तुलसीदासजी का विवाह रत्नावली से हुआ. वे अपनी पत्नी x से बहुत ज्यादा आसक्त थे. एकबार उसने पति को धिक्कारते हुए कहा कि तुम जिस शरीर से प्यार करते हो वह नश्वर है. यदि इस शरीर से राम की भक्ति की जाय तो मनुष्य अपने जीवन को सफल कर सकता है. पत्नी की फटकार सुनकर तुलसीदास संसार से विरक्त हो गये और उन्होंने गृहत्याग कर दिया. बादमें रत्नावली अपने इस कृत्य के लिए पश्चाताप करती है और स्वयं अपने आप को धिक्कारती भी है. जो सखियाँ उसके पति- प्रेम को देखकर ईर्ष्या करती थी वे भी अब रत्नावली को दोष देती है. अब रत्ना के लिए एक मात्र विरह का ही सहारा रहा गया. वैसे तो सदैव नर ने नारी का त्याग किया है किन्तु रत्नावली के संदर्भ में परंपरा से प्रतिकूल हुआ. वह स्वयं दुःखी है, वियोगिनी है फिरभी वह कामना करती है कि सब सुखी रहें. सबको पति-सुख प्राप्त हो. साथ ही साथ वह अपने प्रियतम के सुख एवं सफलता की कामना करती रहती है. संक्षेपमें, इस रचना में रत्नावली के वियोग को गुप्तजी ने वाणी प्रदान की है.

वस्तुगत आधार
÷"÷"÷"÷"÷"÷

शकुन्तला

कालिदास कृत " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " की कथा इस प्रकार है. प्रथम अंक - राजा दुष्यन्त एक मृग का पीछा करता हुआ कण्व के आश्रम की ओर आता है. तब तपस्वी कुमारों ने कहा कि इस आश्रम के मृग की रक्षा करनी चाहिए, हत्या नहीं. बादमें, कुमारों ने उनको चक्रवर्ती पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद दिया. राजा कण्व के आश्रम की ओर जा रहा था, वहीं प्रियंवदा, अनुसूया और शकुन्तला मिलती हैं. आश्रम कन्याएँ पानी सींच रही थीं. मुनि कण्व सोमतीर्थ गए थे. तब तक वे शकुन्तला को अतिथि सत्कार का भार सौंप कर गए थे. वह मेनका एवं विश्वामित्र की पुत्री थी. कण्व तो उसके पालक पिता थे. यह बात दुष्यंत के पूछने पर उसकी सखी ने बतायी. प्रथम अंक के अंतमें वह जाती है लेकिन उसका मन दुष्यंत में ही लगा हुआ था दुष्यंत का हृदय भी उसने खींच लिया था.

दूसरा अंक - विदूषक को भी दुष्यंत के साथ अपनी प्रियतमा से अलग करना पड़ता था. विदूषक ने कहा कि मुझ ब्राह्मण को भी आपके साथ परेशान होना पड़ता है. तब राजा ने भी शिकार खेलने का विरोध किया. और सेनापति को बुलाकर कहा कि सैनिक को इस तपोवन से दूर रहने की आज्ञा दे दो. विदूषक एवं राजा आश्रमकन्या के सौन्दर्य के बारे में बातें कर रहे थे. विदूषक शकुन्तला को मार्ग में पड़ी हुई कन्या अर्थात् हीन समझता था. जब दुष्यंत तो उसकी ओर आकर्षित हो गया था. वहाँ दो ऋषिकुमारों ने कहा कि यहाँ के राक्षस हमारे यज्ञ में विघ्न डाल रहे हैं. इसीलिए यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए आप इसकी रक्षा करिये. तभी करभक ने आकर कहा कि राजमाताओं ने चतुर्थी के दिन पुत्रपिण्डपालन नामक उपवास पर आपको उपस्थित रहने के लिए कहा है. तब राजा ने विदूषक को राजधानी भेजा एवं वे आश्रम की ओर गये.

313

तीसरा अंक - जैसे ही राजा आश्रम में गया वैसे ही राक्षसों के उपद्रव समाप्त हो गए. तब तपस्वीकुमार सब कार्य निर्विघ्न करने लगे. शकुन्तला और दुष्यंत विरहाग्नि से ग्रस्त हो गये. राजा शकुन्तला को देखने के लिए मालिनी नदी के तट पर गया. शकुंतला फूलों की सेज से अलंकृत शिला तट पर लेटी हुई थी. और सखियाँ उसको शिथिलता का कारण पूछ रही थीं. वह अत्यंत क्षीण हो गयी थी और उसका मुख पीला पड़ गया था. सखियों के पूछने पर शकुन्तला ने कहा कि उसके रोग का कारण राजर्षि हैं. शकुन्तला की विरहदशा को सुनकर राजा प्रत्यक्ष हुआ. महाराज ने जब उसके शरीर के बारे में पूछा तब प्रियंवदा ने कहा कि उसके रोग की औषधि अब मिल गई है. दोनों सखियाँ उनको छोड़कर चली गई. राजा ने उसकी सखियों को आश्वासन दिया कि शकुन्तला उसकी पटरानी होगी एवं उसका पुत्र राजगद्दी का उत्तराधिकारी होगा. सखियों के जाने के बाद दोनों के बीच प्रेमालाप एवं चेष्टाएँ होने लगीं. गौतमी के आगमन के बाद वे दोनों कुटी में गए. राजा, राक्षसों की हत्या के लिए गया.

चौथा अंक - यज्ञ की समाप्ति के बाद ऋषियों ने राजर्षि दुष्यंत को नगर जाने की अनुमति दी. राजा दुष्यंत चला गया. अनुसूया ने प्रियंवदा से कहा कि शकुन्तला का गन्धर्व रीति से मंगलमय विवाह हो गया है. दोनों को इस बात की प्रतीति हुई कि कण्व इस विवाह की अनुमति देंगे. तभी मुनि दुर्वासा आते हैं. वे दोनों जब तक वहाँ जाये तब तक तो दुर्वासा ने शकुन्तला को शाप दिया कि तू जिसकी चिन्ता में तपस्वी अतिथि को भूल गई है, वह दुष्यंत भी तुझे भूल जायगा. जब अनुसूया ने दुर्वासा से प्रार्थना की तब उन्होंने तब उन्होंने कहा कि जब वह अपने प्रिय को कोई आभरण दिखायेगी, तब यह शाप छूट जायेगा. इस बात से उनको सान्त्वना हुई क्योंकि राजा शकुन्तला को स्मृति के लिए अंगूठी दे गए थे. उन्होंने इस शाप की बात अपने मन में ही रखी. उसी रात्रि को मुनि कण्व आश्रम लौट आये. दूसरे दिन आकाशवाणी से शकुन्तला के विवाह की और उनकी गर्भवती होने की बात का पता चला. तब मुनि ने शकुन्तला को ऋषिकुमारों और गौतमी के साथ

हस्तिनापुर भेजा. मुनि ने सास, ससुर एवं गुरुजनों की सेवा करने के लिए कहा. और यह आशीर्वाद दिया कि वह चक्रवर्ती पुत्र की माता होगी.
पाँचवा अंक- गौतमी, शारद्वत एवं शार्ङ्गरव हस्तिनापुर गये. लेकिन शापवश दुष्यंत को शकुन्तला की स्मृति नहीं हुई. वह उसको पहचान न सका. शकुन्तला को दी गई अंगूठी भी कहीं खो गई थी. उसको छोड़कर गौतमी, शार्ङ्गरव और शारद्वत चले गये. वह बेचारी चिल्लाने लगी तब राजा के पुरोहित उसको अपने घर पर ले जा रहा था. जब तक उसको पुत्र- प्राप्ति न हो तबतक पुरोहित अपने घर पर रखना चाहता था. लेकिन वे मार्ग में ही थे तभी वहाँ बिजली के समान एक स्त्री आई एवं उसको गोदी में बैठाकर अन्तर्धान हो गई.

छठा अंक - दो सिपाही धीवर को पकड़कर लाते है. क्योंकि उसके पास राजा की हीरे से जड़ी हुई अंगूठी थीं. उसको देखकर राजा को पूर्व की बातों का स्मरण हुआ. राजा शकुन्तला के वियोग में का तीव्र अनुभव करने लगा. विदूषक ने उसे आश्वासन दिया कि जब अंगूठी मिली है तब शकुन्तला भी मिलेगी. शकुन्तला की सखी सानुमति राजा की विरहावस्था को देख रही थीं. वह यह देख न सकी और वहाँ से चली गई. इन्द्र के सारथी मातलि ने आकर कहा कि आप दुर्जेय नामक दानव पर विजय प्राप्त करने के लिए शस्त्र धारण करें.

सातवाँ अंक - असुरों से विजय प्राप्त कर राजा कश्यप के दर्शन के लिए उनके आश्रम में गया. वहाँ राजा ने एक बालक को सिंह के दाँत गिनते हुए देखा बादमें, राजा और शकुन्तला की भेंट हुई. राजा ने कहा कि उसकी क्रूरता का दण्ड अब उसे मिल चुका है. बादमें शकुन्तला को पता चला कि खोई हुई अंगूठी के प्राप्त होने से राजा को पूर्व स्मरण हुआ है. बादमें, राजा, पत्नी और पुत्र को लेकर मुनि कश्यप के दर्शन के लिए गए. कश्यप ने भी कहा कि राजा का कोई दोष नहीं है. स्मृतिभ्रंश का कारण दुर्वासा का शाप था. बादमें, कश्यप की आज्ञा से महाराजा पत्नी और पुत्र के साथ हस्तिनापुर में आये.

गुप्तजी लिखित " शकुन्तला " की कथा इस प्रकार है--

उपक्रम - दुष्यंत मृग के शिकार के लिए कण्व के आश्रम में गया. तब वहाँ उसको मृग नहीं बल्कि मृगनयनी मिली. इसको लेकर कालिदास ने अपने प्रसिद्ध नाटक की रचना की.

जन्म और बाल्यकाल- मुनिवर कौशिक के तप को देखकर सुरपति ने मेनका नामक अप्सरा को भेजा. मेनका ने शकुन्तला को जन्म दिया. मेनका उसको जन्म देकर चली गई. तब मुनि कण्व उसको अपने आश्रम में ले गये. कण्व उसके पालक पिता हुए. गौतमी ने उसको पाला. वह पशु, पक्षियों, पेड़-पौधे के साथ खेलती हुई बड़ी होने लगी. कण्व को इस बात की चिन्ता होती थी कि शकुन्तला को योग्य वर कहाँ से आयेगा.

दर्शन- एक बार मुनि शकुन्तला को आश्रम का भार सौंपकर सोम तीर्थ गए. तब मृगया में आसक्त दुष्यंत का वहाँ आगमन हुआ. शकुन्तला को देखकर राजा निस्तब्ध रह गया. शकुन्तला के पास उड़ता हुआ भ्रमर आया. तब सखियों ने कहा कि तू अपने रक्षण के लिए दुष्यंत को पुकार. यहाँ से दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित हुए.

पत्र - शकुन्तला की चाह में अधीर होकर दुष्यंत मालिनी तीर पर घूम रहा था. तब शकुन्तला पल्लव- शैया पर पड़ी थी. उसकी काया क्षीण हो गई थी. दोनों ही एक दूसरे के बिना विरह से तड़प रहे थे. सखियों की बात मानकर शकुन्तला ने दुष्यंत को पत्र लिखा. इस पत्र को सुनकर राजा प्रकट हुआ और कहा कि तुम काम से तप गई हो लेकिन राजा तो काम से भस्म हो रहा है. बादमें, दोनों मिलन- सुख का अनुभव करने लगे.

अवधि - दोनों ने गान्धर्व विवाह किया. राजा जा रहाथा तब सखियों ने कहा कि शकुन्तला को भूल नहीं जाना. राजा ने शकुन्तला को अपनी नामांकित मुद्रिका दी. राजा ने कहा कि प्रतिदिन तुम मेरे नाम का एक एक अक्षर गिनती रहना. जब तक ये पूरे होंगे, तब तक शकुन्तला को लाने के लिए उसके लोग आ जायेंगे.

अभिशाप - शकुन्तला दुष्यंत के ध्यान में मग्न थी तब दुर्वासा मुनि का आगमन हुआ. उनका सत्कार न होने से मुनि ने शकुन्तला को शाप दिया कि तू जिसके ध्यान मग्न है, वही तुझे भूल जायेगा. जब अनसूया और प्रियंवदा को शाप का पता चला तब वे उसके निवारणार्थ मुनि के पास गई. तब मुनि ने कहा कि मुद्रिका को देखकर राजा को स्मरण होगा.

विदा- कण्व को इस बात का हर्ष था कि वे जैसा चाहते थे वैसा वर उसको मिल चुका है. मुनि कण्व ने कहा कि तुझे भी शर्मिष्ठा जैसे कुल-दीप की प्राप्ति होगी. गुरुओं की सम्मान सहित सेवा करना एवं सपत्नियों से सखियों- सा भाव रखना. बादमें, शकुन्तला के साथ गौतमी एवं दो शिष्य हस्तिनापुर गये.

त्याग- शापवश राजा ने शकुन्तला को नहीं अपनाया. शकुन्तला ने अपनी अंगूठी की ओर देखा लेकिन मुद्रिका ही नहीं थी. अर्थात शकुन्तला एवं शिष्यों के सब प्रयत्न व्यर्थ गए. बादमें, शकुन्तला को छोड़कर गौतमी और शिष्य चले गये. वह उनके पीछे आ रही थी. तब मेनका आकर कश्यप के आश्रम में ले गई.

स्मृति- वही मुद्रिका मीन के उदर से मिली. उसको देखकर राजा को पूर्व की घटना का स्मरण हुआ. लेकिन अब पुनर्मिलन की कोई आशा नहीं होने के कारण वह पछताने लगा.

कर्तव्य - उसको शकुन्तला के सिवा ओर किसी की सुधि नहीं रही. अपने राज-काज और खान-पान को वह भूल गया. तभी राजा को कालनेमि से लड़ने के लिए जाना पड़ा.

मिलन- राजा ने कालनेमि से युद्ध किया और उसमें विजय प्राप्तकर वह कश्यप के आश्रम में दर्शन के लिए गया. तब उसने सर्वदमन को देखा कि जो सिंह के दाँत गिन रहा था. वह पुरुवंश का था. उसकी माता का नाम शकुन्तला था. जब राजाने उसके पिता का नाम पूछा तब वह तपस्विनी नाम देने के लिए तैयार नहीं हुई. तब राजाने कहा कि वह मैं ही हूँ. इतना कहकर वह गिर पड़ा .

जब उसको चेतना आई तब वह शकुन्तला की गोद में था. राजाने उसको कहा कि वह किसी पाप के मोह के कारण उसको पहचान नहीं पाया. इसके लिए उसने क्षमा याचना की. इस प्रकार राजा शकुन्तला के पैरों में गिर पड़े. तब शकुन्तला ने कहा कि इसका कारण अज्ञात दैव का दोष था. बादमें, सबने कश्यप के दर्शन किये। दुर्वासा के शाप का सबको पता चल गया. राजा, पत्नी और पुत्र सहित राजधानी गये. बादमें, सर्वदमन ने सारी पृथ्वी को जीत लिया. और प्रजा का भरण करता था जिससे उसका नाम भरत रखा गया. भरत के नाम से ही " भारत " बना.

तुलना

कालिदास का नाटक सात अंकों में लिखा गया हैं. " शकुन्तला " की कथा ग्यारह खण्डों में लिखी गई हैं. दोनों में शकुन्तला के जन्म की, प्रेम की कथा एक - सी है. राजा मृगया खेलता हुआ वहाँ जाता है. तब राजा को मृग की जगह मृगनयनी प्राप्त होती है. राजा को भ्रमर का बहाना निकालकर शकुन्तला के निकट जाने का अवसर मिला. एक दूसरे को देखकर ही वे दोनों आकर्षित हो गये. दोनों में कण्व की अनुपस्थिति का वर्णन किया है. जब कण्व नहीं है तब आश्रम का भार शकुन्तला पर था. कण्व साम तीर्थ गये थे.

कालिदास ने लिखा है कि राजा यज्ञ की निर्विघ्न समाप्ति के लिए अधिक दिन रहे थे. जबकि गुप्तजी ने ऐसा कुछ उल्लेख नहीं किया है.

शकुन्तला विरह से पीली पड़ गई थी. उसका शरीर क्षीण हो गया था. तब वह पत्र लिखती है. उसको सुनकर राजा प्रत्यक्ष आया. इस घटना का वर्णन दोनों कवियों ने किया है. बादमें, दोनों ने अपने प्रेम को प्रकट किया. इसके बाद दोनों मिलन-सुख का अनुभव करने लगें. दोनों ने गन्धर्व विवाह किया. राजा ने विदा के समय शकुन्तला को मुद्रिका दी. जब शकुन्तला राजा के विचारों में खोई हुई थी तब दुर्वासा मुनि शाप देकर चले गये. शकुन्तला की सखी ने जाकर शाप में थोड़ी- बहुत मुक्ति दिलाई कि अंगूठी को देखने से

राजा को शकुन्तला का स्मरण होगा. कालिदास लिखते हैं कि कण्व को शकु-न्तला के विवाह का पता आकाशवाणी से हुआ. जबकि गुप्तजी ने लिखा है कि कण्व को इस बात से बहुत हर्ष हुआ कि उसको उसके योग्य वर की प्राप्ति हुई है. कण्व ने गृहस्थ पिता जैसा उपदेश देकर उसको बिदा दी. उसके साथ गौतमी, शारद्वत एवं शार्ङ्गरव भी गए. राजा शकुन्तला को पहचान नहीं पाया. गौतमी और ऋषिकुमार चले गए. तब पुरोहित शकुन्तला को अपने घर ले जाने के लिए तैयार हुआ. इसका वर्णन कालिदास ने किया है. गुप्तजी के इस काव्य में भी इस घटना का उल्लेख हुआ है. मुद्रिका की प्राप्ति होते ही राजा सुधि खो बैठता है. उसका मन सिर्फ शकुन्तला में ही था. वह कालनेमि से युद्ध करने के लिए गया. वहाँ से विजय प्राप्त कर कश्यप के आश्रम में गया. वहाँ शकुन्तला एवं सर्वदमन से मिलन हुआ. बादमें, वे हस्तिनापुर गये.

पत्रावली
÷:÷:÷

गुप्तजी लिखित पत्रावली के पत्र ऐतिहासिक आधार को लेकर लिखे गए हैं. इसका कारण यह है कि " इतिहास में कवि की दृढ़ आस्था है. वह अपने विषय का चयन प्रायः भारतीय इतिहास से करता है. " पत्रावली " में भी यही हुआ है. " [1]

माइकेल मधुसूदन दत्त रचित " वीरांगना " से प्रभावित होकर गुप्तजी ने " पत्रावली " की रचना की. गुप्तजी ने " वीरांगना " का हिन्दी में अनुवाद भी किया है. " वीरांगना " में ग्यारह ऐतिहासिक पौराणिक पत्र संकलित है, जबकि " पत्रावली " में सात ऐतिहासिक पत्र हैं. " वीरांगना" में वर्णित द्वारकानाथ के प्रति रुक्मिणी का पत्र और " पत्रावली " के रूपवती का पत्र में समानता है. " पत्रावली और " वीरांगना " के बाह्य रूप में भी समानता है. लेकिन पत्रों में वर्णित परिस्थितियाँ भिन्न हैं.

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता- उमाकांत- पृ. 238

यशोधरा -

भगवान बुद्ध के जीवन-संबंधी अनेक घटनाओं का वर्णन बौद्ध- धर्म विषयक ग्रंथों में मिलता है. ये ग्रंथ पालि एवं संस्कृत साहित्य में लिखे गये हैं. ये ग्रंथों का चीनी, बर्मी, तिब्बती आदि भाषाओं में अनुवाद होने से उस सामग्री का विस्तार भी हुआ है. इन ग्रंथों में बुद्ध के साथ साथ यशोधरा के जीवन-वृत्त का विवरण भी मिलता है. जो पालि में लिखित " पिटक " " अवदान- ग्रंथ ", " निदान कथा, " महाभिनिष्क्रमण सुत्त ", " जातक " आदि ग्रंथ हैं. " महावस्तु ", " ललित विस्तार ", " बुद्ध चरित ", " बोधिसत्व अवदान मालाएँ " आदि संस्कृत ग्रंथों में इस विषय की सामग्री उपलब्ध हैं. उन्नीसवीं सदी में यशोधरा की इस परंपरा को बंगाल के कवि नवीनसेन ने आगे बढ़ाया. अंग्रेजी कवि एडविन अरिनोल्ड ने " लाइफ ऑफ एशिया " में इस विषय पर लिखा है. हिन्दी में इस परंपरा को आगे बढ़ाने का कार्य आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, श्री मैथिलीशरण गुप्त एवं पं. अनूप शर्मा ने किया. अर्थात इस विषय पर अनेक ग्रंथ लिखे गये हैं. लेकिन गुप्तजी ने " यशोधरा " के लिए अश्वघोष कृत " बुद्ध चरित " का आधार लिया है. गुप्तजी की दृष्टि पूर्ववर्ती कवियों के अनुसार गौतमबुद्ध के जीवन पर न रहकर, यशोधरा पर ही टिकी है. वही उनके ग्रंथ का मुख्य पात्र और प्रयोजन है. गुप्तजी ने स्वयं " यशोधरा " के शुक्ल में लिखा है - " हाय ! यहाँ भी वही उदासीनता .अमिताभ की आभा में ही उनके भक्तों की आँखें चौंधियाँ गई और उन्होंने इधर देखकर भी न देखा. " [1]

" बुद्ध चरित " की कथा

अश्वघोष कृत बुद्धचरित में भगवान बुद्ध के जन्म से लेकर धातु विभाजन तक की कथा का आकलन हुआ है. शुद्धोदन इक्ष्वाकु-वंश के राजा थे. उनकी महामाया थी. वह जब गर्भवती थी तब उसने वन मेंजाने की इच्छा प्रकट की.

1. यशोधरा- शुक्ल, पृ. 5

· 320

राजा ने रानी की धार्मिकता देखकर उसे प्रसन्न करने के लिए नगर को छोड़कर वन का मार्ग लिया. उसका प्रसवकाल समीप होने से सुन्दरवन में वितानयुक्त शय्या का आश्रय लिया. पुष्पनक्षत्र में पुत्र का जन्म हुआ. उसका जन्म पार्श्व से हुआ. वह जन्म से ही जागरूक था. उस सिंह- गति वाले बालक ने भविष्यवाणी की कि- " जगत् के हित के लिए ज्ञान अर्जन करने के लिए मैं जनमा हूँ, संसार में मेरी यह अन्तिम उत्पत्ति है. " [1] अदृश्य देवताओं ने भी उनको बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए आशीर्वाद दिये. उनका जन्म जगत के मोक्ष के लिए हुआ था. जिससे सारा संसार शान्त हो गया. लेकिन राजा को आनन्द और भय की भावना पैदा हुई. और आँखों से अश्रुधाराएँ बहने लगीं. रानी भी आनंद और भय से व्यथित हुई. प्रसिद्ध ब्राह्मण ने कहा कि- " सुवर्ण के समान उज्ज्वल और प्रदीप के समान चमकीले इस गुणवान के नक्षत्रों के अनुसार, वह निश्चय ही बुद्धर्षि होगा या पृथ्वी पर मनुष्यों के बीच चक्रवर्ती सम्राट . " [2] अगर वह ऋषि भी हुआ तो भी सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करेगा और राजा भी हुआ तो भी सब राजाओं में श्रेष्ठ होगा. " जैसे धातुओं में विशुद्ध सुवर्ण, पर्वतों में मेरु, जलाशयों में सागर, ग्रहों में चन्द्र और अग्नियों में सूर्य श्रेष्ठ है, वैसे ही मनुष्यों में आपका पुत्र. " [3] उनके जन्म से उस नगर की प्रजा पवित्र एवं निरा-भिमानी बन गई. अपने पुत्र के प्रभाव को देखकर माता को अत्यंत हर्ष हुआ. इसका परिणाम यह आया कि वह मर गई. माता की मृत्यु के पश्चात् मौसी ने अपने पुत्र के समान उनको पाला. राजा ने पुत्र में आसक्ति उत्पन्न करने के लिए यशोधरा नामक कन्या से विवाह किया. उनके लिए सब ऋतुओं में सुखदायी महल बनवाये. जिससे संसार में उनका मन लगा रहे. यशोधरा ने पुत्र को जन्म दिया. राजा को पौत्र जन्म से अत्यधिक आनंद हुआ. पुत्र को

---

1. बुद्धचरित- पहला भाग- अनु. सूर्यनारायण- पृ. 3

2. वही, पृ. 6

3. वही, पृ. 7

विषयों में आसक्त देखकर राजा को हर्ष हुआ . लेकिन एक दिन सिद्धार्थ ने बाहर जाने की इच्छा प्रकट की. वे जब जा रहे थे तब बुद्ध एक वृद्ध को देखा, दूसरी बार जब वे नगर में गये तब एक रोगी को देखा, तीसरी बार एक निष्प्राण व्यक्ति को देखा, एक दिन वे मंत्री पुत्र के साथ वन-भूमि देखने के लिए गये तब उन्होंने एक सन्यासी को देखा. उन्होंने पूछा कि " कहो, कौन है ? " [1] तब उसने कहा कि - " हे नर- श्रेष्ठ श्रमण [=संन्यासी] हूँ, जन्म और मरण से डर कर मोक्ष के हेतु संन्यासी हुआ हूँ. " [2] वन से महल गये और पिता से कहा कि मैं मोक्ष की इच्छा के कारण परिव्राजक होना चाहता हूँ. राजा ने सम्मति नहीं दी बल्कि उनके लिए अधिक कामोपभोगों का प्रबन्ध किया गया. उस रात को महल के किवाड़ खुल गये थे और सबलोग सो गए थे. तब कुमार ने अमरत्व की प्राप्ति के लिए गृहत्याग करने का निश्चय किया. और वे सारथि छन्दक के रथ में बैठकर मार्गव के आश्रम तक गये. वहाँ उतरकर उन्होंने अपने वस्त्राभूषणों को तलवार से काट डाला. अर्थात अब वें संन्यासी बन गये. बिम्सार राजा ने भी उनसे कहा कि युवावस्था भोग करने के लिए हैं. लेकिन सिद्धार्थ पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा. सिद्धार्थ ने राजा को कहा कि वे सिद्धि- लाभ के पश्चात उससे मिलेंगे.

पहले उन्होंने जन्म-मरण का अंत करने के लिए भाँति- 2 के उपवास किये. लेकिन, उपवास से उनका शरीर क्षीण हो गया तब भोजन करने का निश्चय किया. सिद्धार्थ ने गोप राजा की पुत्री नन्दबाला से पायस ग्रहण किया और पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गये. यहाँ ही उनको सिद्धि-प्राप्त हुई. मार ने उनको डिगाने के लिए अनेक प्रयत्न किये. लेकिन उन्होंने इसका ध्यान नहीं दिया. बुद्ध अपने पिता के राज्य में गये. बुद्ध को पता चला के शुद्धोदन आज भी उनको पुत्र की भाँति देख रहे हैं. तब बुद्ध ने कहा कि- " हे राजन, मैं

---

1. बुद्ध चरित, पहला भाग- अनु. सूर्यनारायण, पृ. 68
2. वही, पृ. 68

322

जानता हूँ कि अपनी दयालु प्रकृति के कारण आप मुझे देखकर दुःखी हो रहे हैं. पुत्रवान होने का आनंद छोड़िये, और शान्त होकर आप मुझ से पुत्र की जगह धर्म ग्रहण कीजिए. "[1] शुद्धोदन ने पुत्र को प्रणाम किया. राजा शुद्धोदन ने अमरत्व की प्राप्ति के लिए अपना राज्य अपने भाई को सौंप दिया. वे महल में राजर्षि की रहने लगे. बादमें, बुद्ध ने कपिलवस्तु में प्रवेश किया. पति के आगमन से यशोधरा भी जीवित रही. उन्होंने कपिलवस्तु में भिक्षा प्राप्त की और वे न्यग्रोध वन में चले गये. उन्होंने स्वर्ग में रहनेवाली अपनी माता को और मर्कट राक्षस को दीक्षित किया.

बुद्ध ने हिरण्यवती नदी में स्नान किया और आनंद को कहा कि " साल-वृक्षों के बीच लेटने के लिए स्थान तैयार करो, आज रात्रि के उत्तर भाग में तथागत निर्वाण प्राप्त करेगा . "[2] मल्लों को भी बुलाया गया. उनकी धातु को लेने के लिए सात पड़ौसी राजाओं के दूत आये. किन्तु मल्लों ने धातुओं को नहीं देने का निश्चय किया. इसके लिए युद्ध करना पसंद किया. तब द्रोण नामक ब्राह्मण ने उनको रोका. " तब विश्व (=लोकधातु) को जाननेवाले बुद्ध की धातुओं को मल्लों ने आठ भागों में बाँटा और अपने लिए एक भाव रखकर, उन्होंने शेष सात भाग दूसरों को दे दिये, प्रत्येक के लिए एक "[3] अर्थात " बुद्ध चरित " में बुद्ध के जन्म से लेकर धातु विभाजन तक की कथा है.

यशोधरा की कथा
=============

" यशोधरा " का आरंभ सिद्धार्थ के " महाभिनिष्क्रमण " से हुआ है. एक दिन उन्होंने एक वृद्ध, रुग्ण, मृत एवं सन्यासी को देखा. इनको देखकर उनका मन संसार से ऊब गया और वे विचार में डूब गये. उनकी मनः स्थिति बड़ी चिन्तनीय थीं. जब यह जीवन, यौवन शाश्वत नहीं है, तब

---

1. बुद्धचरित, दूसरा भाग- अनु. सूर्यनारायण, पृ. 45
2. वही, पृ. 102
2. वही, पृ. 144

323

शाश्वत चीज की खोज करनी चाहिए. और इसकी खोज करने के लिए वे एक रात को घर छोड़कर चल निकले. तब यशोधरा, नन्द, महाप्रजावती, शुद्धोदन, पुरजन आदि विलाप करते हैं. उनके संन्यासी हो जाने के बाद यशोधरा केश काट डालती है एवं साधारण- सा वेश धारण करती है. वह राहुल के लिए जीती रहती है. वह शुद्धोदन आदि के भोजनोपरान्त साधारण भोजन करती थी. महाभिनिष्क्रमण के उपरांत यशोधरा का जीवन दो भागों में बँटा दिखाई देता है. एक विरहिणी परित्यक्ता नारी का दूसरा राहुल- जननी के रुप में. " पहला उसकी आँखों का पानी हैं और दूसरा उसके आँचल का दूध. समूचा ग्रंथ कुछ प्रारंभिक गीतों को छोड़कर इन दो संदर्भों में बँटा हुआ है. बुद्ध ने मार को हरा दिया था. जब उन्होंने बुद्धत्व को प्राप्त कर लिया तब जन्म-मृत्यु के रहस्य को जानकर देव भी जीवनमुक्त हुए. शुद्धोदन को पता चला कि बुद्ध मगध में आए हैं. तब, वे जाना चाहते हैं लेकिन गोपा के बिना तो नहीं.

" तेरे अर्थ ही तो मुझे उसकी अपेक्षा है.
गोपा- विना गौतम भी ग्राह्य नहीं मुझको । " [1]

अर्थात, गोपा के बिना वे भी नहीं जाते हैं. बादमें, वे कपिलवस्तु में आए. आज तो वे एक भिक्षुक मात्र ही हैं. प्रभु अजिर में आते हैं फिरभी यशोधरा अपने कक्ष से बाहर नहीं आई. स्वयं बुद्धदेव ही उस कक्ष में आते हैं. इस प्रकार प्रभु ने उसकी लाज रख ली. प्रभु ने गोपा को कहा कि-

" दीन न हो गोपे, सुनो, हीन नहीं नारी कभी,
भूत-दया-मूर्ति वह मन से शरीर से । " [2]

उन्होंने यह भी कहा कि वे उसके धर्म एवं ध्यान से ही मार और अप्सराओं से बच पाये थे. अंतमें, उसने राहुल प्रभु को अर्पित कर दिया.

---

1. यशोधरा, पृ. 124
2. वही, पृ. 142

324

तुलना- " बुद्धचरित " में " भगवान बुद्ध के जन्म " से लेकर " धातु- विभाजन " तक की घटनाओं का वर्णन हुआ है. जबकि गुप्तजी ने महाभिनिष्क्रमण से काव्य का आरंभ किया है. और अंत उनके सिद्धि लाभ से. अर्थात, इस काव्य में कवि ने यशोधरा के जीवन और उसके विरह को प्रमुखता दी है. कवि का लक्ष्य परंपरा से उपेक्षिता गोपा है, गौतम बुद्ध नहीं. दोनों में सिद्धार्थ का सारथी छन्दक रहा है. अश्वघोष ने शुद्धोदन के कुल का, गर्भवती रानी की वन में जाने की इच्छा का वर्णन किया है. लेकिन गुप्तजी का लक्ष्य ही यह नहीं था. प्रसिद्ध ब्राह्मण ने कहा था कि सिद्धार्थ ब्रह्मर्षि या तो चक्रवर्ती सम्राट होगा. सम्राट बनाने की इच्छा से राजा ने अनेक प्रयत्न किये. लेकिन जब वे नगर में घूमने के लिए गए तब एक दिन एक , दूसरे दिन दूसरा. इस प्रकार उन्होंने चार दृश्यों को देखा और जन्म-मरण को दूर करने के लिए और विश्व के कल्याण के लिए एक रात को घर छोड़ दिया. गुप्तजी ने इसका वर्णन नहीं किया है. उन्होंने लिखा है --

" देखी मैंने आज जरा !
हो जावेगी क्या ऐसी ही मेरी यशोधरा ? " [1]

अर्थात,इस जगत की नश्वरता को देखकर उन्होंने गृहत्याग किया. इसके बाद, बुद्ध के दर्शन कहीं भी नहीं होते हैं. सारे काव्य में यशोधरा की ही प्रधानता रही है. अश्वघोष ने लिखा है कि जब सिद्धार्थ वन में गये तब राजा बिम्बसार उनसे मिला था. गुप्तजी ने इसका उल्लेख नहीं किया है. जन्म-मरण का अंत करने के लिए पहले उन्होंने उपवास किये और बादमें भोजन ग्रहण करने लगे. पीपल के वृक्ष के नीचे बैठ गये जहाँ उनको अमरत्व की प्राप्ति हुई. इसका वर्णन " यशोधरा " में नहीं हुआ है. जब वे तप कर रहे थे तब मार ने उनको डिगाने के लिए अनेक प्रयत्न किये. इस घटना का उल्लेख दोनों लेखकों ने किया है. बुद्ध सिद्धि प्राप्त करने के पश्चात कपिलवस्तु गये तब शुद्धोदन उनसे प्रभावित हुए और उन्होंने उनका राज्य भाई को सौंप दिया और वे अमरत्व

---

1. यशोधरा, पृ. 15

की प्राप्ति के लिए महल में राजर्षि की तरह रहने लगे. बादमें, उन्होंने नगर से भिक्षा ग्रहण की और वे न्यग्रोध वन में चले गये. बुद्ध ने अपनी माता कि जो मर गई थी उनको दीक्षित किया. ऐसा वर्णन गुप्तजी की रचना में नहीं है. वहाँ न तो शुद्धोदन उनसे प्रभावित होकर राजर्षि बन जाते हैं और न तो माता को दीक्षित करते हैं. बल्कि शुद्धोदन आदि को मिलकर अपनी मानीनि यशोधरा को मिलने के लिए उसी कक्ष में जाते हैं जहाँ वे उसको छोड़कर गए थे. बादमें, वह पुत्र राहुल उन्हें अर्पित कर देती है. यहाँ ही " यशोधरा " समाप्त हो जाती है. " बुद्ध चरित " में उनकी मृत्यु एवं " धातु- विभाजन " की घटना को भी कथा में जोड़ दिया है. यशोधरा राहुल को सौंपकर कृतकृत्य हो जाती है. गुप्तजी ने यशोधरा की मृत्यु आदि का वर्णन नहीं किया है.

कुणाल- गीत

" कुणाल- गीत " अशोक कालीन इतिहास पर आधारित रचना है. " धर्मानन्द कोसांबी के अनेक ग्रंथों से विशेषतः " भारतीय संस्कृति और अहिंसा ", " भगवान बुद्ध " आदि से तथा कुमार स्वामी की हिन्दू-दर्शन और बौद्ध-दर्शन " पुस्तक से कवि ने इस विषय के अपने विचारों का परिपोषण किया. उसने " धम्मपद " से दार्शनिक तथ्यों का आकलन भी किया. " [1]

काबा और कर्बला

इस काव्य के प्रणयन का उद्देश्य स्वयं गुप्तजी के शब्दों में इस प्रकार है - अपने देश में आन्तरिक सुख-शान्ति के लिए हमको हिलमिल कर ही रहना होगा. समान- दुख ही हमारी पारस्परिक सहानुभूति का आधार नहीं होना चाहिए. यह तो एक विवशता का विषय है. हमें एक दूसरे के प्रति उदार और सहिष्णु होना होगा, एक दूसरे से परिचय और प्रेम बढ़ाना होगा. " [2] गुप्तजी ने इस रचना में इस्लाम धर्म के पैगम्बर मुहम्मद साहब के जीवन की कतिपय घटनाओं का वर्णन किया है.

---

1. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य - कमलाकांत पाठक, पृ. 218
2. काबा और कर्बला, आवेदन, पृ. 5

326

सन् 1912 में गुप्तजी मुंशी अजमेरी के संपर्क में आये. तब मुहम्मद साहब के उपदेशों का रुपान्तर वे दोहों में कर रहे थे. " प्रेमचन्दजी ने कवि को ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर यह सूचना दी कि हजरत हुसैन के साथ कुछ आर्य अथवा हिन्दुओं ने भी कर्बला के नरमेघ में आत्माहुति दी थी. " [1] गुप्तजी ने उसका उल्लेख कर्बला " में किया है. " किन्तु श्रद्धापूर्वक ही, स्पर्धापूर्वक नहीं . " [2] उसने मुहम्मद साहब की जीवनी तथा मरसिये आदि बंगला भाषा में पढ़े और इसी आधार पर इसकी नियोजना की गई है.

इस रचना के लिए कवि ने इतिहास का आधार लिया है.

इतिहास
------ मुहम्मद साहब का जन्म 571 ई० में मक्का में हुआ था. उनके पिता अब्दुला पुत्र के जन्म के पहले मर चुके थे और उनकी माता अमीना जब वे छः साल के थे तब मर गई. उन दोनों की मृत्यु के बाद अब्द-अल मुतालिब ने उनका पालन पोषण किया. जब वे भी नहीं रहे तब उनके चाचा अबु तालिब मुहम्मद की देखभाल करने लगे. जब वे बारह साल के थे तब वे अबु तालिब के साथ सीरिया की यात्रा को गये. वहाँ वे एक ईसाई संत से मिले. इसका परिणाम यह आया कि वे विश्व के पैगम्बर के रुप में इतिहास में प्रसिद्ध हुए.

मुहम्मद जब पच्चीस साल के हुए तब उन्होंने धनी विधवा खदीजा से जो उनसे पन्द्रह साल बड़ी थी शादी की. वे एक छोटी गुहा में गये जो मक्का के नजदीक हैं. वहाँ वे ध्यानमग्न हो जाते थे. वहाँ उनको सत्य की प्राप्ति हुई. वे जल्दी से घर पर गये और पत्नी को यह घटना सुनाई. उन्होंने उप-देश देते हुए कहा कि भगवान एक है. वे सर्व शक्तिमान है. उन्होंने ही विश्व की रचना की है. वहाँ न्याय का दिन भी रखा गया है.

ईश्वर को प्राप्त करने के बाद, मुहम्मद ने अपने लोगों के बीच उपदेश दिया. लेकिन उन्होंने मुहम्मद के प्रति अपनी घृणा प्रदर्शित की. उपदेशक और

---

1. काबा और कर्बला, पृ. 4
2. वही, पृ. 4

327

अल्लाह के पैगंबर मुहम्मद के उपदेश को उनकी पत्नी खदीजा, अली और अबु-बकर ने स्वीकार किया. उन्होंने काबा को जेरुशलम में बदल दिया. वे मक्का से मदीना आये वहीं उनकी मृत्यु हुई. उनको बारह पत्नियाँ थीं. इनमें से कई प्रेम से और कई राजनीतिक दृष्टि से पत्नी के रुप में अपनाई गई थी. इन बारह में से आयशा, उनको अधिक प्रिय थी, वह अबु- बकर की लड़की थी. खदीजा को कई संतानें हुई, लेकिन उनमें से फातिमा ही जीवित रही. अन्य सब की मृत्यु हो गई.

उनकी मृत्यु के बाद अबु-बकर, अमर, उथमान, अली आदि खलीफा हुए.

अली की मृत्यु के बाद हसन को खलीफा बनाया गया. उसकी मृत्यु के बाद हुसैन को गद्दी दी गई. मुआविया और उसके पुत्र यजीद को खलीफा बनने का इन्कार कर किया गया और अल- हुसैन को गद्दी दी गई. कूफा से पच्चीस मील दूर कर्बला में उनको घेर लिया. जब उन्होंने मुआविया और उमटयाद की आज्ञा का पालन नहीं किया तब काट डाला गया. उनका मस्तक उनकी बहन और पुत्र को सौंप दिया गया. उन्होंने अपने भाई और पिता के शव की कर्बला में अंतिम विधि की. हसन की मृत्यु के बाद महोरम की प्रथा भी बदल दी गई.

काबा और कर्बला की कथा

इस काव्य का आरंभ काबा के पाषाण को कौन संस्थापित करें ? इस प्रश्न को लेकर हुआ है. मुहम्मद ने कहा कि भगवान के समक्ष सब कोई समान है न तो कोई ऊँचा है और न तो नीचा. तब उन्होंने एक चादर में उस पाषाण को रखने की सलाह दी और उन्होंने उस चादर को उठाकर पाषाण का संस्थापन किया.

उनको हजरत का ज्ञान हुआ. उनके चाचा अली, उनकी पत्नी उनके पहले विश्वासी बने. उनके कई विरोधी थे. कुरैशी उनको मारने के लिए तैयार हो गया था. तब नबी ने अबूबक को कहा कि अब जाति नाश करने के लिए

328

तैयार हो गई है तब जन्मभूमि मक्का का त्याग करना चाहिए. और वे मक्का को त्याग देते हैं. वे मानते थे कि ईश्वर पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण सभी ओर हैं. सफीया उनकी आठवीं पत्नी थी. वह यहूदी धर्म की थी. लेकिन मुहम्मद को सब धर्म के प्रति सम्भाव था. मुहम्मद के पश्चात अबुबक्र, बादमें अमर को खिलाफत का भार सौंपा गया.

जेरुशलम का प्रधान पुरुष सोफ्रोनियास ने अरबों से हार जाने के बाद कहा कि इस स्थान को हम खलीफा के हाथ में सौंप सकते हैं. यह सुनकर उमर कुछ खजूर और जल- पात्र को लेकर जेरुशलम गये. खलीफा को देखकर सोफ्रोनियास को भी आश्चर्य हुआ. सुलेमान के बाद दूसरे अमर खलीफा आये.

कर्बला - इमामहुसैन के बलिदान का वर्णन किया गया है. अली और आतमा को हसन, हुसैन नामक दो पुत्र थे. मुहम्मद के बाद अबूबक्र, उमर, उसमान, अली आदि खलीफा हुए. अली की मसजिद में हत्या की गई. हसन के बाद हुसैन को शासन सौंपा गया. नगरवासियों ने ही हुसैन को खलीफा बनने का आग्रह किया. वे यजीद को नहीं चाहते थे. हुसैन ने सपरिवार कूफा की यात्रा की. वहाँ वह अकेला शत्रुओं के सामने जूझता है. हुसैन अपने पुत्र अकबर को पानी नहीं पीला सका. हुसैन का घोड़ा भी हुसैन को पानी पिलाये बिना पानी पीना नहीं चाहता है. अंतमें, वे प्यासे ही शत्रु पक्ष से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए.

तुलना - इतिहास में मुहम्मद पैगम्बर के नाम के बारे में, उनके माता- पिता और उनकी मृत्यु का वर्णन मिलता है. जबकि गुप्तजी ने इनको स्थान नहीं दिया है.

इतिहास में और " काबा और कर्बला " में उनके हजरत का और उनके उपदेश का वर्णन है. दोनों कथनानुसार उनके प्रथम विश्वासी उनकी पत्नी और उनके चाचा थे. उनकी मृत्यु के बाद के खलीफाओं का वर्णन दोनों रचनाओं में किया गया है. दोनों ने हसन के बाद हुसैन की बलिदान कथा लिखी है.

329

इतिहास के अनुसार हुसैन को काट डाला गया जबकि " काबा और कर्बला " के अनुसार उनको प्यास से तड़पकर मृत्यु को भेंटना पड़ा. दोनों ने हसन और हुसैन की बलिदान कथा लिखी है.

विष्णुप्रिया -
========

गुप्तजी ने " विष्णुप्रिया " की रचना दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयदयालजी डालमिया के अनुग्रह से की हैं. उन्होंने गुप्तजी को शिशिरकुमार घोष लिखित " श्री अमिय निमाई चरित " और आयुष्मसन आनन्दगुप्तने प्रभुदत्त ब्रह्मचारी लिखित " श्री चैतन्य चरितावली " भेजी. इन पुस्तकों का कवि ने अध्ययन मनन किया. विष्णुप्रिया संबंधित सामग्री निम्न कृतियों में भी मिलती है -

1) मुरारी गुप्ता कृत " चैतन्य- चरितम् और कड़चा "

2) चैतन्य भागवत

3) चैतन्य चरितामृत

4) लोचनदास कृत " चैतन्यमंगल "

5) जयनंद कृत " चैतन्यमंगल "

6) गोविन्ददास का " कड़चा "

7) प्रेम विलास, भक्ति रत्नाकर और चैतन्य संबंधी अन्य गीत.

8) नरहरि सरकार के गीत

9) समयानुसार लोक में प्रचलित दंत- कथाएँ

10) जगदबंधु कृत गौर पद तरंगिनी) साहित्य परिषद, कलकत्ता द्वारा प्रकाशित)

11) चैतन्य चंद्रोदय नाटक- कवि कर्णपूर कृत

12) विष्णुप्रिया श्री विधुभूषण सरकार कृत

13) श्री श्री विष्णुप्रिया ठकुरानी : नदिया से प्रकाशित मासिक

14) अनंत संहिता

15) निमाई के ताऊ के पुत्र श्री प्रद्युम्न मिश्र द्वारा श्रीकृष्ण चैतन्य चंद्रोदयावली.

330

16ई वासुदेव घोष का वर्णन

17ई प्रेमदास कृत वर्णन.

इसके अतिरिक्त " चैतन्य भागवत " में भी चैतन्य के जीवन वृत का वर्णन किया गया है. महाप्रभु चैतन्य की कथा बंगाल की प्रसिद्ध कथा है. कई लेखकों ने इस कथा के लिए अपनी लेखनी उठाई है. लेकिन, गुप्तजी कृत " विष्णुप्रिया " , श्री अमिय निमाई चरित " और श्री चैतन्य चरितावली " के आधार पर लिखी गई रचना है. " विष्णुप्रिया " के लिए उपरोक्त ग्रंथ अधिक है विश्वसनीय है. जैसाकि पुस्तक के " निवेदन " में स्वयं गुप्तजी ने लिखा है कि - " श्री अमिय निमाई चरित के समान वह भी अनेक खण्डों में लिखी श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी की " श्री चैतन्य चरितावली " थी. अन्यान्य ग्रन्थ कर्ताओं के साथ उनके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ . "[1]

श्री चैतन्य चरितावली की कथा

प्रभुदत्त ब्रह्मचारी ने " श्री श्री चैतन्य चरितावली " में महाप्रभु के जन्म पूर्व की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों का वर्णन किया है. उनके जन्म समय पूर्व बंगाल की स्थिति अच्छी नहीं थीं. लेकिन चैतन्य की भक्ति से उसमें परिवर्तन हुआ.

जगन्नाथ, विद्या के लिए सिलहट से नवद्वीप आये थे और यहाँ की पाठशाला में अध्ययन करते थे. श्री नीलाम्बर चक्रवर्ती भी विद्या के लिए यहाँ आये थे. श्री नीलाम्बर ने अपनी ज्येष्ठ कन्या शची का विवाह जगन्नाथ से किया. शची ने आठ कन्याओं को जन्म दिया, लेकिन उनकी अकाल मृत्यु हुई. बादमें, विश्वरूप का जन्म हुआ और उसके जन्म के नव- दस साल के बाद चैतन्य देव का जन्म हुआ. विश्वरुप गंभीर प्रकृति का था और गौरांग चंचल प्रकृति का. जब वह रोता था तब माता " हरि बोल, बोल हरि बोल ! मुकुन्द माधव गोविन्द बोल "[2] बोलती थी. और वह चुप हो जाता था.

1. विष्णुप्रिया - निवेदन- पृ. 4

2. श्री चैतन्य चरितावली- प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पृ. 78

अर्थात, बचपन से ही उसका मन प्रभु भक्ति में लगा हुआ था. प्रसवगृह नीम के पेड़ के नीचे होने से उसका नाम " निमाई " रखा गया. पिता ने उसकी परीक्षा करने के लिए रुपये- पैसे, अन्न- वस्त्र, द्रव्य- शस्त्र तथा पुस्तकें रक्खीं. निमाई ने पुस्तक उठाई. अर्थात वह बड़ा भारी पंडित होगा. विश्वरूप पन्द्रह साल का हुआ तब माता- पिता उसके विवाह के लिए सोचने लगे. लेकिन, एक रात को विश्वरुप ने गृहत्याग किया. पुत्र के वियोग में पिता जगन्नाथ भी मर गये. पहले पिता ने निमाई को पढ़ाई की मना कर दी थी लेकिन बादमें आज्ञा दी गई. पं. रघुनाथ जी " दीधिति " नामक न्याय के ऊपर एक ग्रंथ लिख रहा था. उस समय निमाई ने भी न्याय के ऊपर एक ग्रंथ लिखा. रघुनाथ निमाई के इस ग्रंथ को देखकर रोने लगे. जब निमाई ने इसका कारण पूछा तब रघुनाथ ने कहा कि - " भला, तुम्हारे इस ग्रंथ के सामने मेरे ग्रंथ को कौन पूछेगा ? इसी मनोवेदना के कारण मैं अपने आँसूओं को रोकने में असमर्थ हो रहा हूँ. " [1] यह सुनकर निमाई ने अपनी पोथी को समुद्र में फेंक दिया. सोलह वर्ष की अवस्था से निमाई ने अध्यापन का कार्य शुरु किया. जब निमाई पाठशाला से आ रहे थे तब उन्होंने पं. वल्लभाचार्य की पुत्री लक्ष्मीदेवी को देखा लक्ष्मीदेवी ने भी निमाई की ओर देखा. बादमें, जगन्नाथ मिश्र के एक स्नेही ने आकर निमाई का विवाह लक्ष्मीदेवी से करने के लिए कहा, शची माता और स्वयं निमाई भी इस विवाह के लिए तैयार थे. विवाह के बाद, वे पूर्व बंगाल की यात्रा के लिए गए. वहाँ लक्ष्मीदेवी की मृत्यु हुई. उनका दूसरा विवाह पंडित सनातन मिश्र की पुत्री विष्णुप्रिया से हुआ. जब वह घर में आई तब चौखट में उसकी ऊँगली पिच गई. उसमें से खून बहने लगा. बादमें, वे पितृश्राद्ध करने के लिए गया गए. वहाँ श्री ईश्वरपुरी ने निमाई को मंत्र-दीक्षा दी. वहाँ से आने के बाद उनमें काफी परिवर्तन हो गया था. वे भोजन करते समय भी रोने लगते थे. उनकी अवस्था पागल- सी हो गई थी. अब उनके लिए सारा विश्व कृष्णमय था. उन्होंने अध्यापन का कार्य छोड़ दिया. निमाई ने बारह- तेरह वर्ष की अवस्था से घर को छोड़ दिया. संन्यास के पूर्व, निमाई

---

1. श्री चैतन्य चरितावली - प्रभुदत्त ब्रह्मचारी- पृ. 78

ने अपने भक्तों और सन्तों को भावी वियोग के दुःख की बात कही. बादमें, माता और पत्नी को भी संन्यास की बात कही. जब वे निद्रावस्था में थे तब उन्होंने गृहत्याग किया. वे गंगाजी को पार करके श्री केशव भारती के आश्रम में गये. वहाँ उन्होंने संन्यास दीक्षा ली. संन्यास के बाद वे शान्तिपुर में अद्वैताचार्य के यहाँ गये तब निमाई माता को लेकर वहाँ गये और माता ने सन्यासी पुत्र के दर्शन किये. माता सन्यासी पुत्र को फिर से गृहस्थ बनाकर पाप करना नहीं चाहती थी. वे दक्षिण की यात्रा के लिए गये तब उन्होंने वासुदेव कुष्ठी का उद्धार किया. वेश्याओं का भी उद्धार किया. प्रभु जब नवद्वीप में आये थे तब माता के साथ घर की ओर गये. घर के सामने जाकर वे खड़े रहे. विष्णुप्रिया ने जाकर उनका चरण स्पर्श किया. स्त्री का स्पर्श होते ही उन्होंने कहा कि- " तुम कौन हो ? "[1] उनके इस प्रश्न से विष्णु-प्रिया को दुःख हुआ. " हाय रे वैराग्य तेरी ऐसी कठोरता को बार बार धिक्कार है, जो अपने शरीर का आधा अंग कही जाती है, जिसके लिए स्वामी को छोड़कर दूसरा कोई है ही नहीं. उसीका निर्दय स्वामी, उसके जीवन का सर्वस्व, उसका इष्टदेव पूछता है - " तुम कौन हो ? "[2] बादमें प्रभु ने उसको जीवन- यापन के लिए अपने पैरों के दोनों खड़ाउओं को देते हुए कहा- देवि ! हम सन्यासियों के पास तुम्हें देने के लिए और है ही क्या ! वह लो, तुम इन पादुकाओं के ही सहारे अपने जीवन को बिताओ । "[3] इसके बाद वे वहाँ से चले गये. सनातनजी, प्रकाशानन्दजी ने भी प्रभु चैतन्य का दर्शन किया. प्रभु अपने जीवन के अंतिम बारह वर्ष अपने को राधा मानकर कृष्ण के विरह में तड़पते रहे. उनकी उन्मादावस्था बढ़ती जाती थी. एक रात्रि को वे ~~कस्मीश~~ गम्भीरा मन्दिर में गये. लेकिन वहाँ वे नहीं थे. गोविन्द ने उनको गौओं के बीच में देखा. प्रभु के संकीर्तन से उनमें संचार हुआ. वे मंदिर की

---

1. श्री चैतन्य चरितावली- चतुर्थ खण्ड- प्रभुदत्त ब्रह्मचारी- पृ. 29
2. वही, पृ. 30
3. वही, पृ. 31

दीवारों से मुख एवं सिर रगड़ते थे. एक बार उन्होंने कालिन्दी में गोपियों के साथ क्रीडा करते हुए कृष्ण को देखा और वे समुद्र में कूद पडे. वे मृत अवस्था में भक्तों को मिले. प्रभु रथ यात्रा के उत्सव के दिन जब शाके 1455 का आषाढ़ का दिन था. तब प्रभु मंदिर में गये. और उस मूर्ति में लीन हो गये. उनकी मृत्यु के पहले माता शची ने अपने नश्वर देह को गंगा में त्याग दिया था. विष्णुप्रिया को सास और पति का वियोग सहना पडा. प्रभु ने स्वप्न में आकर विष्णुप्रिया को कहा कि - " जिस नीम के नीचे मैंने माता के स्तन का पान किया था, उसी के नीचे मेरी काष्ठ की मूर्ति स्थापित करो, मैं उसी में आकर रहूँगा. "[1] वंशीवदन ने नीम की एक लकड़ी में गौरांग की मूर्ति बनवाई और पूजा के लिए रखी. विष्णुप्रिया ने अपने भाई तथा भाई के पुत्र यादवनन्दन को पूजा के लिए मंदिर में नियुक्त किया. वंशीवदन की मृत्यु के बाद विष्णुप्रिया की सेवा वृद्ध दामोदर करता था. वे बाहर भी नहीं निकलती थीं. वे जप की संख्या के साथ डाले चावलों को तीसरे पहर में पकाती थी. फाल्गुनी पूर्णिमा के दिन जो चैतन्य का जन्मदिन था. तब वह उनकी मूर्ति में एकीभूत हो गई.

विष्णुप्रिया की कथा

बंगाल जो कवियों, भक्तों एवं ज्ञानियों की भूमि है, वहाँ माता शची और पिता जगन्नाथ रहते थे. उनको विश्वरुप एवं विश्वम्भर नामक दो पुत्र थे. विश्वरुप ने अपनी बाल्यावस्था में संन्यास ले लिया. उसके विरह में दुःखी होकर पिता मर गये. रघुनाथ नैय्यायिक थे. निमाई ने एक पुस्तक लिखी थी जो उनको एक नैय्यायिक सिद्ध करती थी. लेकिन जब रघुनाथ ने कहा कि आज तक मैं मानता था कि मैं ही एक नैय्यायिक हूँ लेकिन यह बात आज गलत ठहरी. यह सुनकर निमाई ने अपनी पुस्तक को फाड़कर गंगा में फेंक दी. निमाई का विवाह राजमान्य पंडित की पुत्री विष्णुप्रिया से हुआ. उसका गृह प्रवेश

1. श्री चैतन्य चरितावली- पंचम खण्ड- प्रभुदत्त ब्रह्मचारी, पृ. 214

हुआ तब उसके अँगूठे से रक्त बहने लगा. तब निमाई ने अपने अँगूठे से इसके अंगूठे को दबा दिया. कुछ दिन के बाद निमाई पितरों का श्राद्ध करने के लिए गया गए. जब वे वहाँ से आये, तब तक तो उन्होंने सन्यास ग्रहण करने के लिए सोच लिया था. संन्यास के पूर्व उन्होंने यह बात माता और पत्नी से की थी. उन्होंने सब के हित के लिए गृहत्याग किया. वे एक रात को माँ और पत्नी को छोड़कर चले गये और संन्यास ले लिया. जब वे शान्तिपुर में आये तब माता -पुत्र की भेंट हुई. वृन्दावन जाते हुए वे नवद्वीप आये. वहाँ उन्होंने अपनी खड़ाऊँ विष्णुप्रिया को दी. उन्होंने सनातन प्रकाशानन्दजी के दर्शन किये। खड़ाऊँ के सहारे ही वह अपनी शेष आयु पूर्ण करना चाहती थी. बादमें, माता शची ने गंगा तीर जाकर शरीर त्याग किया. जब विष्णुप्रिया ने सुना कि निमाई भी प्रभु मूर्ति में विलीन हो गये. तब तो उसके लिए और कोई सहारा रहा ही नहीं। प्रभु ने स्वप्न में आकर कहा कि--

" कुछ दिन और प्रिये, सहना हैं तुमको,
आयु शेष रहते मरण आत्मघात है.
स्थूल रुप से ही यदि चाहो तुम मुझको,
मेरी एक मूर्ति रक्खो निज गृह- कक्ष में । " [1]

बादमें, उसने निमाई की मूर्ति रखी और वह स्वयं भी प्रभु भक्ति में अपना शेष जीवन व्यतीत करने लगी. वह प्रतिदिन जितने श्लोक जपती थी उतने ही धान्य- कण का भोजन करती थी.

तुलना :- प्रभुदत्तजी ने बंगाल की परिस्थितियों का वर्णन किया है. गुप्तजी ने इतना ही लिखा है कि बंगाल जैसी पवित्र भूमि में माता शची एवं जगन्नाथ रहते थे. गुप्तजी ने तो न शची और जगन्नाथ के विवाह का उल्लेख किया है. और न उनकी आठ कन्याओं का उल्लेख ही. जिनकी अकाल मृत्यु हो गईं थीं. गुप्तजी ने तो सिर्फ विश्वरुप एवं विश्वम्भर के जन्म का उल्लेख किया है. दोनों

---

1. विष्णुप्रिया, पृ. 134

ग्रंथों के अनुसार विश्वरूप ने अपनी बाल्यावस्था में गृहत्याग किया और संन्यास ले लिया. पुत्र के विरह में दुःखी पिता की मृत्यु हुई. इस घटना का उल्लेख भी दोनों में हुआ है. प्रभुदत्त जी ने लिखा है कि उनका प्रथम विवाह लक्ष्मी-देवी से हुआ था जब वे पूर्व बंगाल गये तब लक्ष्मीदेवी की मृत्यु हुई. तब उनका दूसरा विवाह विष्णुप्रिया से हुआ. गुप्तजी ने एक ही विवाह का वर्णन किया है जो विष्णुप्रिया से हुआ था. दोनों लेखकों के मतानुसार गृह- प्रवेश के समय विष्णुप्रिया को चौखट पर चोट लगी जिससे उनके अंगूठे से खून बहने लगा. बादमें, वे गया गए तब से उनमें परिवर्तन हुआ. वे प्रभु की भक्ति करने लगे. उन्होंने विश्व के कल्याण के लिए संन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया. इसके पूर्व उन्होंने माता और पत्नी को इस घटना की सूचना दी थी. एक रात्रि को वे गृहत्याग कर चले गये. जब वे नवद्वीप में आये तब विष्णुप्रिया से उनकी भेंट हुई. पहले तो प्रभु ने विष्णुप्रिया से पूछा कि - " तुम कौन हो ? " अर्थात उनको विष्णुप्रिया का स्मरण ही नहीं रहा था. बादमें, उन्होंने उसे जीवन के आधार के लिए अपनी खड़ाऊँ दीं. पुत्र के विरह से दुःखी होकर माता ने गंगा में प्राण-त्याग दिया. बादमें, चैतन्य भी प्रभु की मूर्ति में लीन हो गये. इन सारी घटनाओं का वर्णन " विष्णुप्रिया " और " श्री चैतन्य चरितावली " में हुआ है. प्रभु की मृत्यु के बाद उन्होंने स्वप्न में आकर विष्णुप्रिया से कहा कि मेरी एक मूर्ति बनाओ. इस आदेश से उन्होंने एक मूर्ति बनवायी. गुप्तजी के अनुसार विष्णुप्रिया ने घर में ही मूर्ति की स्थापना की. प्रभुदत्त जी के मतानुसार नीम के पेड़ के नीचे मूर्ति रखी गई. उसकी पूजा विष्णुप्रिया के भाई और यादवनन्दन करते थे. दोनों ग्रंथों के अनुसार वह

" हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे । "

नाम जपती थीं. वह जितना जाप जपती थीं., उतने ही चावल के कण पकाकर खाती थीं. अंतमें वह महाप्रभु की मूर्ति में एकीभूत हो गई. गुप्तजी ने इसका उल्लेख नहीं किया है. वे इस बारे में मौन रहे हैं.

रत्नावली =-

लोक-श्रुतियों के आधार पर ही गुप्तजी ने " रत्नावली " की रचना की है. " साकेत ", " यशोधरा " तथा " विष्णुप्रिया " गुप्तजी की ऐसी ही रचनाएँ हैं जिनमें उन्होंने हिन्दी साहित्य की उपेक्षित नारियों को ऊँचा उठाया है. तुलसीदास को लेकर बहुत कुछ लिखा गया है किन्तु तुलसीदास को सचमुच में " तुलसी " बनानेवाली उनकी पत्नी रत्नावली के जीवन एवं व्यक्तित्व के विषय में प्राय: हिन्दी साहित्य मौन ही रहा है. गुप्तजी ने संभवत: पहली बार जनश्रुतियों को आधार मानकर उस मूक वियोगिनी नारी की कथा को वाणी प्रदान की है. स्वयं गुप्तजी ने " निवेदन " में इस बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है - " रत्नावली के व्यक्तित्व क्या, अस्तित्व पर भी लोग शंकाएँ कर रहे हैं. ".

" मूल गोसाईं चरित " तथा जनश्रुतियों में यह मिलता है कि तुलसीदास अपनी पत्नी रत्नावली के प्रति बहुत आसक्त थे. उनका एक क्षण का वियोग भी उनके लिए असह्य था. एक बार रत्नावली तुलसीदास को बिना कहे अपने भाई के साथ मायके चली गई. तुलसीदास भी रात्रि के घने अंधकार में तथा मूसलाधार वर्षा में किसी प्रकार उसके पीछे ही पीछे ससुराल पहुँच जाते हैं. जब ~~वर्षा में किसी प्रकार उसके पीछे~~ रत्नावली देखती है कि उसके पतिदेव बिना बुलाये ही ससुराल आ पहुँचे हैं, तब उसकी मर्यादा आहत होती है. और वह आवेश में तुलसीदास को धिक्कारती है -

- " लाज न लागत आपको, दौरे आयेहु साथ ।
धिक धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहूँ मैं नाथ ।।
अस्थि-चरम-मय देह मम, तामें जैसी प्रीति ।
तैसी जौं श्री राम महँ, होत न तौ भवभीति ।। [1]

---

1. गोस्वामी तुलसीदास - श्यामसुन्दर दास , पृ. 39

रत्नावली की फटकार सुनकर तुलसीदास के राम भक्ति के संस्कार जाग्रत हो जाते हैं और वे घर- बार त्यागकर राम भक्ति में डूब जाते हैं. इस कथा के साथ ही साथ रत्नावली के वियोग का विस्तृत वर्णन गुप्तजी की अपनी कल्पना की देन है.

मौलिकता और आधुनिकता
:=:=:=:=:=:=:==:=:=

शकुन्तला -

" शकुन्तला ", " अभिज्ञान शाकुन्तलम् " के आधार पर लिखी गई रचना है. कालिदास के नाटक का प्रभाव ही नहीं है बल्कि अनेक स्थलों पर कालिदास का अनुवाद हुआ है. फिरभी गुप्तजी की रचना अपने आप में संपूर्ण है. अतएव मौलिकता न होते हुए भी यह कृति स्वतंत्र है. डा० उमाकांत भी इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि इसे मौलिक मानना समीचीन नहीं. " [1]

पत्रावली -

भारत में अंग्रेजों के आगमन के समय सांस्कृतिक एकता के बावजूद भारत व्यावहारिक रुप से भिन्न-2 राज्यों में बँट गया था और एक राजा दूसरे पर चढाई करता रहता था. इतना ही नहीं, ये राजा एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए विदेशी आक्रमणकारियों को भी साथ देते थे. इन झगड़ों के मूल में कोई सामाजिक या मानवीय आदर्श न होकर राज्य विस्तार की भावना, या अपने अहंकार की तृप्ति ही मुख्य कारण थी. कभी-2 किसी की सुंदर बहु- बेटी का अपहरण करने की इच्छा से भी युद्ध होता रहता था. औरंगजेब ने रुपनगर की राजकुमारी रुपवती के रुपगुण की प्रशंसा सुनकर उसे अपनी बेगम बनाना चाहता था. यहाँ किसी की सुंदर बहू-बेटी के अपहरण की भावना रही है. अर्थात् पुरुष स्त्री को सुखोपभोग की सामग्री मात्र समझता था. जिसके फलस्वरुप पुरुषों के लिए धर्मशास्त्र के अनुसार स्वच्छन्दता थी कि वह जितने चाहे उतने विवाह कर सकते हैं. कभी कुलीन या अपनी जाति में श्रेष्ठ समझे. जानेवाली व्यक्ति भी अनेक विवाह करते थे. जब रुपवती को इस बात

1. मैथिलीशरण गुप्त - कवि और भारतीय संस्कृति के आख्याता- उमाकान्त पृ. 17

338

की प्रतीति हो गई कि औरंगजेब आयेगा ही तब उसने महाराना राजसिंह को पत्र लिखा. रुपवती राजसिंह की कीर्ति को सुनकर उसे वर चुकी थी. तब राजसिंह ने औरंगजेब से युद्ध किया और उसकी सेना को पराजित कर रुपवती से विवाह किया. यहाँ राजसिंह ने रुपवती [नारी] को पुरुष से तुच्छ नहीं समझा है बल्कि उसे पुरुष की सहगामिनी माना है. इसप्रकार इसमें गुप्तजी की नारीउत्थान की भावना मिलती है.

द्विवेदीयुग के कवियों ने जन्म- भूमि को पूजनीय मानकर उसे माता की संपूर्ण श्रद्धा एवं स्नेह दिया है. मातृभूमि के प्रति अपने कर्तव्य को समझा और बलिदान की भावना को महत्व दिया. " पत्रावली " में महाराज पृथ्वीराज ने " महाराना प्रतापसिंह के प्रति " पत्र में देश-प्रेम की महत्ता सिद्ध की है. उन्होंने प्रताप को अपने व्रत पर दृढ़ रहने के लिए और स्वाधीनता की रक्षा करने के लिए कहा. राना प्रताप ने कौटुम्बिक विपत्ति के कारण अकबर के साथ सन्धि करने का निश्चय किया था. इस पत्र को पाकर राना प्रताप अपने व्रत पर दृढ़ हो गये. यहाँ अकबर के युद्ध का कारण राज्य- विस्तार की भावना या अपने अहंकार की तृप्ति ही था.

यशोधरा
------ " कथावस्तु " के अनुसार यशोधरा और सिद्धार्थ का जन्म- समय एक ही था. उनके गृहत्याग के पूर्व यशोधरा को अनेक स्वप्न दिखाई दिये. तब ब्रह्मा ने यह सूचना दी कि बुद्ध द्वारा विश्व कल्याण होने वाला है. जब सारथि छंदक को लौटाया तब उन्होंने यशोधरा के सिवा सबके लिये संदेश भेजे. बुद्ध ने सिद्धि- प्राप्ति करने के बाद यशोधरा के पूर्व जन्म पर प्रकाश डाला.

" कँजूर " एवं " तँजूर " तिब्बत के प्रामाणिक ग्रंथ है. इसके अनुसार गौतम को गोपा, मृगजा और यशोधरा नामक तीन स्त्रियाँ थीं. इस ग्रंथ के अनुसार गोपा एवं सिद्धार्थ का विवाह पारस्परिक आकर्षण से हुआ था. राहुल का जन्म सिद्धार्थ के महाभिनिष्क्रमण के छः साल पश्चात् हुआ. शुद्धोदन ने शंका की तब यशोधरा को अपने सतीत्व की परीक्षा देनी पड़ी. उस परीक्षा में वह

पवित्र सिद्ध हुई. यशोधरा, गौतम बुद्ध को गृहस्थ बनाने के लिए प्रयत्न करती रहती है. देवदत्त, सिद्धार्थ का प्रतिद्वेषी था वह यशोधरा के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखता है. यशोधरा उसको निकाल देती है.

" महाभिनिष्क्रमण सुत्त " में उनकी यशोधरा और गौतमी नामक दो स्त्रियों का उल्लेख है. इसमें भी लिखा है कि राहुल का जन्म बुद्ध के महाभिनिष्क्रमण के छः वर्ष बाद हुआ है. कपिलवस्तु में जाते समय बुद्ध ने जातक कथाओं के द्वारा इसका रहस्य समझाया.

आरनोल्ड ने " लाइफ आफ एशिया " में महाभिनिष्क्रमण के समय सिद्धार्थ के आंतरिक संघर्ष का चित्रण किया है. बुद्ध जाने के पूर्व, यशोधरा के पैरों में पड़ते हैं. राहुल को देखते हैं और परिक्रमा करते हैं. वे तीन बार जाते हैं और लौट आते हैं. अंतमें, वे निश्चय करते है कि जाना ही पड़ेगा. और वे गृह त्याग कर संन्यास ग्रहण करने के लिए गये. जब प्रभु कपिलवस्तु में आते हैं तब यशोधरा उनके पैरों में नत मस्तक हो जाती है. राहुल प्रवजित होता है.

नवीनसेन ने " अमिताभ " में इस प्रकार वर्णन किया है. उन्होंने महाभिनिष्क्रमण के समय यशोधरा और राहुल को देखा. वे निद्रावस्था में थे. उनको देखकर प्रभु की आँखों से अश्रु बूँदे गिरने लगीं. पर असंख्य यशोधरा और असंख्य राहुल के दुःख को दूर करने के लिए वे चले गये. वे अमरत्व प्राप्ति के पश्चात कपिलवस्तु में पधारे. तब गोपा को मिलने के लिए उसके कक्ष में गये. राहुल को भिक्षास्वरुप ग्रहण किया.

इन ग्रंथों में गौतम बुद्ध और यशोधरा के जीवन का वर्णन हुआ है. लेकिन गुप्तजी की कृति में मौलिकता है. इसका कारण यह है कि गुप्तजी का उद्देश्य उपेक्षिता नारी थी, भगवान बुद्ध नहीं. न्यमैन ने कहा था कि मानव आत्मा की चरम स्थिति नारीत्व में ही है, चाहे मनुष्य कितना भी " पुरुष " क्यों न बने. यहाँ गुप्तजी का उद्देश्य यशोधरा ही है. अर्थात, कवि ने नारी को कहीं गिरने नहीं दिया है. यशोधरा ही " यशोधरा " की प्रधान-नायिका है.

कुणाल- गीत

" कुणाल- गीत " के कुणाल के व्यक्तित्व में " धम्मपद " के सदुपदेश का रुप मिलता है.

" अक्कोधेन जिने कोधं असाधुं साधुना जिने ।
जिने कदरियं दानेन सच्चेन अलिक वादिनं । " [1]

कुणाल ने जब दंड का स्वीकार किया तब उसका वर्णन इस प्रकार था-

" वस्सिका विय पुप्फानि मघवानि पमुंचति ।
एवं रागंच दोसंच विप्पमुंचेथ भिक्खवो । " [2]

भिक्षाटन करते समय

" सब्ब पापस्य अकरणं कुसलस्स उपसम्पदा ।
सचित परियोदपनं एवं बुद्धान सासनं । " [3]

वह " बहुजन- हिताय " जीवनोत्सर्ग करता है. तब उसे युवराजत्व का आहलाद का नहीं, अष्टांगिक मार्ग के निर्देश का अनुभव होता है. निम्न पंक्तियों में उसकी धर्म- निष्ठा व्यक्त हुई है-

" सब्बे तसन्ति दंडस्स, सब्बेसं जीवितं पियं ।
अत्तानं उपमं कत्वा न हनेय्य न घातये । " [4]

अतएव कुणाल की इच्छा यह है कि --

" पाऊँ सबकी प्रेम-वृष्टि मैं
दूँ सबको विश्वास । " [5]

इसमें कुणाल गीत के दार्शनिक उद्देश्य का आभास भी मिलता है.

---

1. धम्मपद, गाथा- 17,233
2. वही,- 25, 377
3. वही, पृ. 14, 183
4. वही, पृ. 10, 130
5. कुणाल गीत, पृ. 133

भगवान बुद्ध ने भारत में करुणा और मैत्री के उपदेश का प्रचार किया है. उसकी प्रतीति " कुणाल-गीत " के निम्न पद से होती है-

" मैत्री- करुणा में कल्याण,
विश्व-बन्धुता में ही त्राण " [1]

राष्ट्रीय कवि गुप्तजी ने इस रचना में अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी उपस्थित किया है.

" पार उतरना है तो तर,
नारायण हो मेरे नर । " [2]

" संक्षेप में, गुप्तजी के गांधी दर्शन का मानवतावाद बौद्ध संस्कृति के मूलभूत तत्वों से समृद्ध हुआ है. " [3]

काबा और कर्बला
=============

इस रचना के ~~द्वारा~~ " आवेदन " के अनुसार " लेखक ने अपनी ओर से जो किया है, वह यही कि उसने इमामहुसैन का चित्रण अपने ही दृष्टिकोण से किया है. बहुत से शत्रुओं के संहार की अपेक्षा उनकी वीरता उनके बलिदान में ही लेखक की दृष्टि में, अपनी विशेषता रखती है. इसप्रकार उनकी करुणा भी अधीक रोने में नहीं, गम्भीर होने में ही अपना महत्व प्रकट करती है. " [4]

गांधीजी की भाँति गुप्तजी ने भी सर्व-धर्म समन्वय को प्रधानता दी है.

" हिन्दू- मुसलमान का मानस-
मिलनतीर्थ यह महाप्रवाह ।

---

1. कुणाल-गीत, पृ. 112
2. वही, पृ. 111
3. मैथिलीशरण गुप्त : व्यक्ति और काव्य - कमलाकांत पाठक, पृ. 219
4. काबा और कर्बला, पृ. 4

राम- रहीम- धाम होगा तब
वही दुर्ग, संहत सन्नाह । " 1

विष्णुप्रिया

गुप्तजी ने " विष्णुप्रिया " में विष्णुप्रिया को एक मानवी स्त्री के रुप में प्रस्तुत किया है. जबकि बंगाल के इतिहास में उनकी तप साधना एक व्यापक प्रभाव को छोड़ गई है.

लोचनदास ने विष्णुप्रिया के सौन्दर्य का वर्णन किया है. वह वधू-वेश में तड़ित- बालत के समान दिखाई देती हैं. उसकी वेणी ने फणिधर को जीत लिया है. और वह मुनियों की भी आकर्षित कर रही है. उसके चरणों को देखकर ऐसा लगता है कि मानों उनमें त्रैलोक्य की कोमलता को जीतने की सामर्थ्य हो. मुरारिगुप्ता कृत " श्री कृष्ण चैतन्य चरित " के अनुसार संन्यासी चैतन्य ने विष्णुप्रिया को पहचाना नहीं और यही कहा कि तुम कृष्ण को याद करो. किन्तु वह निमाई को ही याद करती थी. वह निमाई को कृष्ण के रुप में देखती थी. सास और पति की मृत्यु के बाद वह भक्तों के सहारे 80 वर्ष से भी अधिक वर्ष तक जीवित रही. श्री यतीन्द्र मोहन चौधरी के मतानुसार वे 92 वर्ष तक जीती रही. विष्णुप्रिया के अंतिम जीवनांश को किसी भी लेखक ने प्रस्तुत नहीं किया है. गुप्तजी भी इस प्रसंग पर मौन रहे हैं. शिशिरकुमार घोष ने विष्णुप्रिया की मानवी गाथा नहीं लिखी. उन्होंने चैतन्य की स्तुति-परक गाथा को गद्य में लिखा है. वासुदेव घोष एवं लोचन-दास ने उसकी गाथा को मानवी रुप में प्रस्तुत की है. बीसवीं सदी के श्री रसिक मोहन विद्याभूषण और श्री विधुभूषण सरकार भी विष्णुप्रिया विषयक कोई नवीन सामग्री लेकर नहीं आए. उन्होंने 16 वीं. सदी के लोकगीतों को प्रकाश में लाने का काम किया है. गुप्तजी ने उनका प्रथम विवाह जो लक्ष्मीप्रिया से हुआ था. उसका उल्लेख नहीं किया है. चैतन्य ने बिदा के पूर्व विष्णुप्रिया से उपभोग किया था. लोचनदास ने विष्णुप्रिया और चैतन्य को

1. काबा और कर्बला, पृ. 59

343

काव्यमय बनाया है. इस प्रकार उनको अमर किया है. संन्यास ग्रहण करने के पूर्व दोनों ने जो बातें की थी, विष्णुप्रिया ने उनकी कोमलता का वर्णन किया है. लेकिन गुप्तजी के काव्य में इसका वर्णन अधिक नहीं है. गुप्तजी ने सोलहवीं सदी के कवियों की भाँति भारतीय नारियों की दीपपंक्तियों को प्रकाशित किया है. अर्थात, कवि ने " राष्ट्रभारती की शब्द-वेधी बाणशक्ति का ही कौशल इस प्रसंग में अपना जयघोष प्रकट करता है और इसी जयघोष में गुप्तजी द्वारा विष्णुप्रिया का लेखन- लक्ष्य भी इस तरह स्पष्टतर प्रकाश के साथ प्रकट हो गया है, मानो विष्णुप्रिया के युग की कंठगासक प्रवंचनाओं को प्रस्तुत करते हुए राष्ट्रकवि ने सोलहवीं सदी की भारतीय नारियों की अश्रु- सिक्त बुझी दीपपंक्तियों को ही मंत्रबल से दुबारा जगमग कर दिया है. "[1]

रत्नावली
======

गोस्वामीजी का वर्णन मिलता है लेकिन रत्नावली का वर्णन नहीं हुआ है. उसकी उपेक्षा की गई है. गुप्तजी ने इस अछूते पक्ष को अपनी रचना का विषय बनाया है. रत्नावली एवं उसके विरह- वर्णन में नवीनता है. यह कवि की मौलिक उद्भावना है. रत्नावली का ऐसा विशद वर्णन हिन्दी साहित्य में मिलता नहीं है. वह विरहिणी है फिरभी वह न तो किसी को कोसती या उपालंभ देती है. वह स्वयं वियोगिनी हैं. लेकिन उसकी यह इच्छा है कि सबको प्रियतम का सुख मिले. ऋतु वर्णन भी परंपरा से भिन्न है. यहाँ भी कवि की मौलिकता का परिचय मिलता है. वह रोती है किन्तु पति के लिए मंगलकामना करती रहती है. अर्थात, यह कवि की मौलिक देन है.

पूर्वलिखित रचनाओं की भाँति नारी के त्याग में ही नर की महत्ता सिद्ध हुई है. नर ने जो कुछ सिद्ध किया है उसके पीछे नारी की बलवती चेतना का महत्व कम नहीं है. गुप्तजी ने उस युग में नारी की महत्ता को प्रदर्शित की है. अगर रत्नावली ने तुलसीदास को फटकारा न होता तो न तो उनको

---

1. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त अभिनन्दन-ग्रंथ - " विष्णुप्रिया : मृत्युजयी मृगमूर्तिका राष्ट्रीय अभिषेक - पृ. 658

344

सिद्धि मिलती और न तो वे राम-भक्त हो पाते. अर्थात, उनकी सिद्धि और महानता के लिए रत्नावली के बलिदान ने कुछ कम काम नहीं किया है. इस प्रकार कवि ने नारी को महत्व दिया है. उसे पुरुष के समकक्ष लाकर खड़ा किया है. यहाँ कवि की उदात्त नारी- भावना का चित्रण हुआ है.

अभिव्यक्ति पक्ष

द्विवेदीयुग में खड़ी बोली का विकास हुआ. इसके पूर्व ब्रज भाषा ही काव्य भाषा थी. लेकिन गुप्तजी ने इस भाषा को काव्योपयोगी बनाने का स्तुत्य कार्य किया. गुप्तजी लिखित " रंग में भंग " खड़ी बोली का प्रथम खण्डकाव्य है.

भाषा-

शकुन्तला " की भाषा परिमार्जित है. कवि ने खड़ीबोली को सभी प्रकार के भावों के अनुकूल ढालने का प्रयत्न किया है.

" पत्रावली " में खड़ीबोली का प्रयोग हुआ है. कहीं-2 ब्रज भाषा और संस्कृत शब्दों का भी प्रयोग किया गया है. इस काव्य की रचना-शैली अधिक उन्नत नहीं कही जा सकती. किन्तु इसमें पर्याप्त ओज एवं प्रवाह अवश्य है.

" यशोधरा " शुद्ध खड़ीबोली में लिखी गई रचना है. इस रचना में खड़ी बोली का प्रौढ़ रुप मिलता है. यशोधरा में भाषा का ललित मार्दव रुप द्रष्टव्य है. यह भाषा गीतिकाव्य के उपयुक्त है.

" कुणाल-गीत " की भाषा सुष्ठु एवं प्रांजल है. इस भाषा में माधुर्य एवं सौष्ठव है. कोमलकांत पदावली से युक्त होने के कारण इसमें पर्याप्त सरसता है. कवि की प्रौढ़ रचना होने के कारण इसकी भाषा सशक्त एवं सजीव है.

" काबा और कर्बला " की भाषा पूर्व कृतियों के समान प्रौढ़ खड़ीबोली है.

" विष्णुप्रिया " काव्य शिल्प की दृष्टि से श्रेष्ठ है. इसकी अभिव्यक्ति प्रणाली सरस है. इसकी भाषा प्रौढ़ , प्रांजल एवं परिमार्जित है. काव्य की

दृष्टि से देखा जाय तो यह एक उत्कृष्ट रचना है.

" रत्नावली " की भाषा काफी परिमार्जित एवं प्रौढ़ हैं.

मुहावरें

शकुन्तला के मन में यह प्रश्न उठता है कि गन्धर्व विवाह के बाद भी क्या राजा दो दिन में ही अपनी पत्नी को त्याग सकता है ?

" आर्यपुत्र ! दो दिन पीछे ही
क्या यों मुँह मोड़ोगे । " [1]

मुद्रिका प्राप्त होने पर राजा को अत्यन्त दुःख हुआ और वे सोचने लगे कि उसका त्याग करते समय मैं जीवित ही कैसे रहा ? मेरी मृत्यु क्यों न हुई.

" तजते हुए प्रिया को मेरी फटी न छाती । " [2]

महाराना प्रताप अपने कुल की मर्यादा को त्यागकर अकबर से सन्धि करने जा रहा था. तब उसे पृथ्वीराज का पत्र मिला .

" निदाघ-ज्वाला से विचलित हुआ चातक अभी, " [3]
" मेरा आ गया काल- सा है " [4], " मूँछे ऊँची करूँ या सिर पर पटकूँ हाथ होके हताश ? " [5] आदि मुहावरों का प्रयोग " पत्रावली " में हुआ है.

जब गौतम बुद्ध कपिलवस्तु में पधारे तब वे भिक्षा माँग रहे हैं.
" हाथ पसार रहे हैं " [6], " आशा से आकाश थमा है, " [7]

1. शकुन्तला, पृ. 38
2. वही, पृ. 46
3. पत्रावली, पृ. 8
4. वही, पृ. 16
5. वही, पृ. 7
6. यशोधरा, पृ. 138
7. वही, पृ. 48

346

" स्तब्ध हो जाओ "[1] " मेरी मलिन गुदड़ी में भी है राहुल- सा लाल "[2] आदि मुहावरों का भी सफल प्रयोग हुआ है.

अंधा कुणाल गीत गा रहा है. वह जगत के कान खोलना चाहता है. जिससे जगत को सच्ची बात का पता चले.

" आँखें मूँद जायें किन्तु खुल जायें जगत के कान । "[3] " काबा और कर्बला " में मुहम्मद ने दास से कहा कि तुम भी मेरे जैसे ही स्वाधीन हो नीच या गरीब नहीं हो. तब उसको अत्यंत विस्मय हुआ.

" विस्मित होकर दास हुआ गद गद गिरा "[4] " न्योछावर ये प्राण आप पर हैं यहाँ "[5] " मेट सकते हो तुम्हीं निज पाप-ताप, निदान "[6] आदि मुहावरें भी हैं.

जब विष्णुप्रिया ने कहा कि अगर गौर को मैं पतिरुप में पाऊँगी तो मेरा जीवन धन्य हो जाएगा. तब सहेली ने कहा कि मूल से उसका ब्याज अधिक अच्छा लगता है. उसका मूल्य उसी वस्तु से अधिक होता है.

" किन्तु सखि, मूल से भी ब्याज प्यारा होता है, "[7] " मूर्च्छित हुए"[8] " छाती से लगा लिया "[9], तिनके का भी कहाँ सहारा "[10]

---

1. यशोधरा, पृ. 117
2. वही, पृ. 39
3. कुणाल-गीत, पृ. 58
4. काबा और कर्बला, पृ. 21
5. वही, पृ. 21
6. वही, पृ. 51
7. विष्णुप्रिया, पृ. 16
8. वही, पृ. 26
9. वही, पृ. 27
10. वही, पृ. 50

347

आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है. " रत्नावली " में रत्नावली पति को कहती है कि -

" ढूँ अब कैसे और उलझना "[1] इसके अतिरिक्त " मेट गया मेरे जीवन का सबसे बड़ा विषाद "[2], " जन्म - जन्म में उस पर मैं बलि जाऊँ "[3] आदि मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है.

लोकोक्तियाँ
========

दुष्यन्त माढव्य से युद्ध के लिए तैयार हो जाय इसीलिए मतिल ने माढव्य से सारा खेल किया. इसका कारण यह कि सुहृदय व्यक्ति को जब तक छोड़ा नहीं जाता तब तक वे दुराचार के लिए तैयार नहीं होते हैं. " गरजता छेड़े बिना कब सर्प है ' "[4] कहीं उनकी सूक्तियाँ ने लोकोक्तियाँ का काम देकर भाषा को अधिक चमत्कृत की है -

" मुक्त है सर्वत्र ही भवितव्यता का द्वार । "[5]

" पत्रावली " के कवि कहते हैं कि आज पृथ्वी पर सब मृत्यु से भयभीत रहते हैं.

" पृथ्वी में हो रहा है सिर पर सबके मृत्यु का नित्य नृत्य "[6]

जब सिद्धार्थ संन्यासी हो गये तब उनको राज्य की लालसा नहीं रही. राज्य भी तुच्छ हो गया.

---

1. रत्नावली, पृ. 24
2. वही, पृ. 70
3. वही, पृ. 53
4. शकुन्तला, पृ. 52
5. वही, पृ. 14
6. पत्रावली, पृ. 6

" सोने का सुमेरु भी उनके निकट हुआ था राई । " [1]

यशोधरा कहती है कि स्वामी के गृहत्याग से उसका सोने का संसार मिट्टी में मिल गया.

" सोने का संसार मिला मिट्टी में मेरा " [2] " दीना नहीं, दुःखिनी हूँ तो भी धर्मचारिणी " [3] " मरने को जग जीता है " [4] " जलने को ही स्नेह बना है " [5]

कुणाल को अंधा करके निष्कासित किया गया तब उसे राज्य की कोई इच्छा नहीं रही. आँखों के साथ मानो हृदय की लालसा भी नष्ट हो गई.

" मिट गया आज सब राज रोग " [6] " स्वगति सत्पथ पर रहे तो क्या करेगा यह अँधेरा " [7] आदि सुंदर लोकोक्तियों का प्रयोग " कुणाल-गीत " में हुआ है.

" काबा और कर्बला " में मुहम्मद कहते हैं कि " भेजा गया हूँ स्वस्ति लेकर , शाप लेकर मैं नहीं. " [8] " वह वीर पा चुका है अपनी गति " [9] " विष्णुप्रिया " में विष्णुप्रिया ने अपनी सखियों से कहा कि वे तो सागर जैसे महान है. उनको प्राप्त करने की शक्ति विष्णुप्रिया में नहीं है. " सागर समेटने चलेगी कौन पोखरी " [10] " मलिन गुदड़ी का मैं तुमको लाल बनाऊँ कैसे ? " [11]

---

1. यशोधरा, पृ. 38
2. वही, पृ. 129
3. वही, पृ. 135
4. वही, पृ. 15
5. वही, पृ. 46
6. कुणाल-गीत, पृ. 66
7. वही, पृ. 38
8. काबा और कर्बला, पृ. 37
9. वही, पृ. 79
10. विष्णुप्रिया, पृ. 15
11. रत्नावली, पृ. 35

349

सूक्तियाँ

दुर्वासा ने शाप का निवारण करते हुए कहा कि-

" आवेगी सुध मुद्रिका निरख के उद्भ्रान्त दुष्यन्त को । " [1]

विचारमग्न शकुन्तला ने दुर्वासा मुनि का सत्कार नहीं किया इसका कारण यह है कि -

" होता है मन एक ही मनुज के दो चार होते नहीं " [2]

जब प्रताप ने अपने स्वाभिमान की रक्षा की है तब फिर से सूर्योदयपूर्व में उदय होगा. अर्थात, प्रताप ने भी सूर्य की भाँति ही अपने नियम का पालन किया है.

" वहीं- प्राची में ही- रवि उदित होगा नियम से " [3]

" यशोधरा " में मानिनी एवं गर्विणी गोपा कहती है कि -

" भक्त नहीं जाते कहीं, आते हैं भगवान, " [4] वह राहुल को कहती है कि " तप ही मनुष्यत्व है " [5] " कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी " [6], " हर्ष की अधिकता भी भार बन जाती है. " [7] आदि सूक्तियों का सुन्दर प्रयोग हुआ है.

कुणाल ने पुनः दृष्टि प्राप्त की फिरभी वह राज्य को त्यागकर घर घर घूमना पसंद करता है. और वह " बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय " [8] के लिए मानों इस प्रकार जीवन व्यतीत करना चाहता है. " स्वर्ग से भी अपवर्ग

---

1. शकुन्तला, पृ. 29
2. वही, पृ. 28
3. पत्रावली, पृ. 11
4. यशोधरा, पृ. 44
5. वही, पृ. 89
6. वही, पृ. 82
7. वही, पृ. 119
8. कुणाल-गीत, पृ. 136

350

ऊँचा लक्ष्य मेरा " [1] " काबा और कर्बला " में बंदी के साथ हजरत ने बन्धु-सा बर्ताव किया. हजरत के उदार भाव को देखकर बन्दी ने कहा " विजित से भी हो भला बरताव " [2]

जब चैतन्य ने संन्यास ग्रहण कर लिया है तब वह उनको फिरसे गृहस्थ जीवन के बन्धन में बाँधना नहीं चाहती है. इस कार्य में उसे अधर्म दिखाई देता है. " इसमें तो और भी अधर्म अपकर्म है. " [3] " प्रणय अचानक ही अंकुरित होता है. " [4] आदि अनेक सूक्तियों का " विष्णुप्रिया " में प्रयोग हुआ है. रत्नावली अपने पति के लिए शुभकामना करती हुई कहती है-

" मंगलमय हो मार्ग तुम्हारा , तुम्हीं हमारे तारण । " [5]

संवाद योजना

शकुन्तला -

कवि ने संवादों से वर्णन को सजीव बनाया है.

" वणिक कोई डूब वारिधि में गया.
धन बहुत पर सुत- रहित आगार है,
अस्तु उस पर राज्य का अधिकार है । "
सोचकर मन में कहा तब भूप ने,
{धर्मश्चारी न्याय के नर-रूप ने ।}
" गर्भिणी यदि हो वणिग्गृहिणी कहीं ,
पूछकर देखो कि वह है या नहीं , "

---

1. कुणाल-गीत, पृ. 114
2. काबा और कर्बला, पृ. 30
3. विष्णुप्रिया, पृ. 64
4. वही, पृ. 17
5. रत्नावली, पृ. 20

" गर्भिणी निकली वणिग्गृहिणी सही,
तुष्ट होकर तब कहा नृप ने यही-
" ठीक है तो और कौन विचार है ?
पितृय धन पर गर्भ का अधिकार है । "
न्याय में यद्यपि न कुछ संशय रहा-
किन्तु फिर तत्काल ही नृप ने कहा-
" यह नहीं, सन्तान हो अथवा न हो,
घोषणा के रुप में सबसे कहो-
"- पापियों को छोड़कर, सुन लें सभी,
जिस स्वजन का हो वियोग जिसे कभी,
वह प्रजा दुष्यन्त को जाने वही,
और उसके स्थान में माने वही । " [1]

" पत्रावली " ऐतिहासिक पत्रों का संकलन हैं. इसमें संवाद का नितान्त अभाव रहा है.

यशोधरा -

संवादों का काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है. प्रबन्ध-काव्यों में संवाद शैली एक प्रमुख आकर्षण है.

" यशोधरा " में शुद्धोदन- यशोधरा संवाद कार्यप्रेरक हैं. इसके अलावा राहुल एवं यशोधरा का संवाद, राहुल- यशोधरा- गौतमी - महाप्रजावती और शुद्धोदन संवाद एवं बुद्ध-यशोधरा- राहुल संवाद का भी महत्व है.

राहुल- यशोधरा संवाद =-

राहुल- तू भी एक हंस को बना के दूत भेज दे,
जो सन्देश देना हो उसीको तू सहेज दे ।
यशोधरा- बेटा, भला वैसा हंस पा सकूँगी मैं कहाँ ?
राहुल - हंस न हो, मेरा धीर कीर तो पला यहाँ ?

---

1. शकुन्तला, पृ. 49

352

यशोधरा- किन्तु नहीं सूझता है, उनसे मैं क्या कहूँ ?
राहुल- पूछ यही बात - " और कब तक मैं सहूँ ? "
यशोधरा- " सिद्धि मिलने तक " कहेंगे क्या न वे यही ?
राहुल- तो क्या सिद्धि मिलने का एक स्थल है वही ?
यशोधरा- बेटा, यहाँ, विघ्न, उन्हें हम सब घेरेंगे ।
राहुल- किन्तु वीर हैं तो अम्ब , वे क्यों ध्यान फेरेंगे ? " [1]

इसप्रकार " यशोधरा " के संवाद सरल एवं स्वाभाविक हैं.

" कुणाल- गीत " के पचानवे प्रगीत कुणाल की आत्माभिव्यक्ति है. इसमें संवादों की नियोजना नहीं की गई है.

" काबा और कर्बला " के संवाद पात्रानुकूल है --
मुआविया ने वचन दिया था उनको ऐसा--

" यह जैसा कुछ हुआ, उसे रहने दो वैसा ।
" मैं निज सुत को नहीं, खिलाफत तुमको दूँगा,
होगा नहीं यजीद, खलीफा मैं ही हूँगा । " [2]

" हम यजीद को नहीं, आपको ही मानेंगे,
और आपके लिए मरण जीवन जानेंगे । " [3]

कवि ने प्रसंग-वर्णन की शैली को संवादों के द्वारा चमत्कृत किया है -

" दे रहा है भीतर ही भीतर तुम्हें जो ताप,
बाहर निकाल दो गिरा दे वह गुप्त पाप । "
सुन यों नबी से सिर एक जन- का झुका,
किन्तु निज पाप वह कह कर ही रुका ।

---

1. यशोधरा, पृ. 102-103
2. काबा और कर्बला, पृ. 69-70
3. वही, पृ. 70

" लज्जित जो देखा उसे, यों कहा उमर ने-
" जायँ अहा ! आप ही क्यों लोग लाजों मरने ? "
बोली नबी- " चोर बनने से परलोक में,
रहना भला है यहाँ लज्जा और शोक में । " [1]

विष्णुप्रिया -

" विष्णुप्रिया " के संवाद रोचक एवं सजीव हैं.

" खाने लगे मिट्टी प्रभु, माँ ने कहा- " यह क्या ? "
" मूल मिट्टी में ही नहीं माँ, क्या सब द्रव्यों का ? "
" है क्यों नहीं बेटा, किन्तु अखिल पदार्थ जो
हमको खिलाती है, उसीको हम खायँ क्या ? " [2]
बोली वह- " भूल गई अब अपने को तू । "
हँस फिर उसने कहा यों- वर बाबाजी,
लाये हो भुलाकर, सँभालना तुम्हीं इसे । " [3]

निम्न उदाहरण भावोद्वेलन की स्वगतोक्ति का है-

" हाय ! मैं छली गई हूँ, छिपकर भागे वे,
जागकर आप यहाँ मुझको सुला गये " [4]

रत्नावली -

यह रचना रत्नावली की आत्मकथा के रुप में लिखी गई होने से इसमें संवाद नहीं है. लेकिन इसमें रत्नावली की स्वगोक्तियाँ मिलती है-

" परित्यक्त कर दिया गया जो,
मूर्त अमंगल-सा अभी,
उसको अपनाने का आग्रह
जाय न विग्रह तक कभी.

---

1. काबा और कर्बला, पृ. 38
2. विष्णुप्रिया, पृ. 11
3. वही, पृ. 19
4. वही, पृ. 47

देखा जन्म-नक्षत्र मात्र ही
लोग विमुख उससे हुए,
पर उसका कर ! चिन्तामणि हो
पारस भी उसके छुए । "
देखा मैंने, मुझे आप ही
रोम - हर्ष- सा हो रहा,
तो हमको क्या और चाहिए ' "
अम्बा ने उनसे कहा ।
" हम ब्राह्मण, निर्वाह मात्र के
लिए हमें धन चाहिए, " [1]
" कहीं कामिनी, कहीं भामिनी,
कहीं मात्र है स्वामिनी,
मन के साथ बुद्धि से भी तुम
हो मेरी सहगामिनी । " [2]

रस योजना -
=========

शकुन्तला -

संयोग श्रृंगार - " पोंछा उसका दृग-नीर स्वयं नृपवर ने,
जिससे प्रवाह में हृदय लगा था तरने ।
निज नामांकित मुद्रिका उसे पहनाई,
इस भाँति मिलन की अवधि विशेष बताई-
प्रतिदिन तू मेरा एक एक नामाक्षर-
गिनती रहना है प्रिये ! सु- निश्चय रखकर । " [3]

---

1. रत्नावली, पृ. 15
2. वही, पृ. 16
3. शकुन्तला, पृ. 24-25

355

" होकर अति सिद्ध विशुद्ध प्रेम के तप में,
करके गान्धर्व विवाह लता-मण्डप में ।
दोनों प्रेमी कृतकृत्य हुए निज मन में,
वह मौन तपोवन पलट गया उपवन में ! " [1]

" हर्षित होते थे हार गूँथ कर दोनों,
पहनाते थे फिर उन्हें परस्पर दोनों ।
पल पल में फिर वे उन्हें बदल लेते थे,
मिलकर पौधों को कभी सलिल देते थे । " [2]

पत्रावली -

करुण रस

" बनी थी जो रोटी विरस तृण का चूर्ण करके,
बचाती बेटी को उस समय जो पेट भरके ।
उसे देखा मैंने अपहृत बिड़ाली कृत वहाँ,
न देखा बेटी को अहह ! फिर था साहस कहाँ ।।
विधात: ! बाप्पा के अतुल-कुल की हा ! यह गति,
किसीने देखी है अवनि पर ऐसी अवनति !
जिन्हें प्रासादों में सुख सहित था योग्य रहना,
उन्हें खाने को भी वन वन पड़े दुःख सहना । " [3]

" यशोधरा " में विप्रलम्भ श्रृंगार, करुण, वात्सल्य तथा शान्त रस का वर्णन हुआ है. इस कृति के आरंभ और अंत में शांत रस है. किन्तु मुख्य रस विप्रलम्भ श्रृंगार है.

विप्रलम्भ श्रृंगार -

" उनका यह कुन्ज-कुटीर वही
झड़ता उड़ अंशु-अबीर जहाँ,

---

1. शकुन्तला, पृ. 23
2. वही, पृ. 23
3. पत्रावली, पृ. 10

अलि, कोकिल,कीर,शिखी सब हैं
सुन चातक की रट " पीव कहाँ ? "
अब भी सब साज समाज वही
तब भी सब आज अनाथ यहाँ,
सखि, जा पहुँचे सुध-संग कहीं
यह अन्ध सुगन्ध समीर वहाँ ! " [1]

सिद्धार्थ आलम्बन विभाव है. यहाँ कोई औचित्य नहीं है. इसका कारण यह है कि ये भाव यशोधरा ने व्यक्त किये हैं.प्रथम पंक्ति से स्मृति संचारी ध्वनित है. चौथी पंक्ति में वितर्क संचारी भाव और " अनाथ पद " से दैन्य संचारी व्यक्त हुआ है.

शान्त रस -
" क्या भाग रहा हूँ भार देख
तू मेरी ओर निहार देख
मैं त्याग चला निस्सार देख,
× × ×
ऊपाश्रय तेरा तरुण गात्र,
कह, वह कब तक है प्राण-पात्र ?
भीतर भीषण कंकाल मात्र,
बाहर बाहर है टीम-टाम
ओ क्षण भंगुर भव, राम राम । " [2]

ये पंक्तियाँ " यशोधरा " के " महाभिनिष्क्रमण " खण्ड से संबंधित हैं. गौतमबुद्ध ने जब संसार को देखा और उसकी क्षणभंगुरता को समझा यहाँ निर्वेद स्थायी भाव जाग्रत होने से शान्त-रस की व्यंजना हुई है.

वात्सल्य रस-
" किलक अरे, मैं नेंक निहारूँ,
इन दाँतों पर मोती वारूँ ।
× × ×

---

1. यशोधरा, पृ. 49
2. वही, पृ. 16-17

लटपट चरण, चाल अटपट-सी मन भाई है मेरे,
तू मेरी अँगुली धर अथवा मैं तेरा कर धारूँ . "[1]

यहाँ राहुल आलम्बन हैं और यशोधरा आश्रय हैं. राहुल के दाँत, उसकी चाल, उसकी उत्सुकता तथा फेनोज्ज्वल हास आदि उद्दीपन का कार्य कर रहे हैं. यहाँ अनुभाव स्नेहसिक्त उक्त कथन, पुलक और अनुमित नेत्र-विकास, शीश एवं हस्त- संचालन आदि है.

" हाँ, गोपा का दूध जमा है राहुल ! मुख में तेरे " से व्यंग्य गर्व संचारी भाव है.

यशोधरा राहुल से कहती है -

" ठहर, बालगोपाल कन्हैया, राहुल, राजा भैया !
कैसे धाऊँ, पाऊँ तुझको हार गई मैं दैया । "[2]

राहुल पूछता है-

" भैया है तू अथवा मेरी दो धन वाली गैया ?
रोने से यह रिस ही अच्छी तिली लिली ता थैया । "[3]

यशोधरा राहुल के प्रश्नों का उत्तर देती है. उसको खिलाती है और पोषण करती है. यहाँ वात्सल्य भावना द्रष्टव्य है.

" कुणाल-गीत " " दृष्ट का संदेश-वाहक, कर्म-प्रेरक, गति संचालक और सौ-सौ राज्यों से भी श्रेष्ठ है.

" बढ़ो बंधु, स्वच्छंद भाव से,
रति-मति-यति-गति भंग न हो - "[4]

उक्ति स्वच्छंदतावाद को मर्यादा के भीतर ही स्वीकार करने का मंतव्य स्पष्ट करती है. ये सभी मनोवृत्तियाँ एक ही भावधारा की,शांत

1.यशोधरा, पृ. 54

2. वही, पृ. 55

3. वही, पृ. 55

4. कुणाल-गीत, पृ. 102

रस की सहयोगिनी है. " [1]

कुणाल-गीत – में करुण रस की प्रधानता है.

" मैं असमर्थ अन्ध हूँ लोगो,
मेरे लिए और दुक भोगो ।
अपना मरण मुझे दे दो तो पा जाऊँ निर्वाण !
चाहता हूँ मैं सबका त्राण । " [2]

यहाँ कुणाल आश्रय है एवं प्रजा (लोगो) आलम्बन हैं. वह निर्वाण को प्राप्त करने के लिए दूसरों का मरण लेना चाहता है. अतएव यहाँ स्थायी भाव शोक की परिणति होने से करुण रस की अभिव्यक्ति हुई है.

" कर्बला " की करुणा कलित कहानी में करुण के उदाहरण सहज प्राप्य हैं.

" मुआविया सामन्त साम का उठ तब बैठा,
वह स्वतन्त्र ही नहीं, खलीफा भी बन बैठा.
चला महा गृह-युद्ध, बहा लहराकर लोहित,
किन्तु धरा की रुधिर-तृप्त कब हुई तिरोहित ?
बली विशेष, परन्तु प्रकृति से सरल अली थे,
उधर विपक्षी कुटिल कूटपटु छँटे छली थे ।
विजय- निकट ही अली पराजित हुए अगत्या,
मसजिद में ही हुई एक दिन उनकी हत्या । " [3]

~~यहाँ कुणाल~~ " विष्णुप्रिया " में करुण रस की प्रधानता होते हुए भी शांत, ~~श्रृंगार रस की नियोजना हुई है.~~ श्रृंगार, वात्सल्य, भक्ति रस ~~एवं~~ की नियोजना हुई है।

संयोग श्रृंगार –

" वर ने अँगूठे से अंगूठे को दबा दिया,
रक्त रुका किन्तु बढ़ी दूनी अनुरक्तता । " [4]

---

1. मैथिलीशरण गुप्त: व्यक्ति और काव्य- कमलाकांत पाठक, पृ. 555
2. कुणाल-गीत, पृ. 130
3. काबा और कर्बला, पृ. 69
4. विष्णुप्रिया, पृ. 19

359

" नाथ चरण से व्रण न दबाते तो क्या रुकती धार '
किन्तु इसी मिष नख से शिख तक गूँजे तनु के तार । " [1]

जब वे विवाह के पश्चात गृहत्याग करते हैं. तब वधू को चोट लगी और उसके अँगूठे से रक्त बहने लगा. तब प्रभु ने उसके अँगूठे को अंगूठे से दबा दिया. अर्थात यहाँ पद-स्पर्श सुखानुभूति का उदाहरण है.

विप्रलम्भ शृंगार

" विष्णुप्रिया " में पूर्वराग का चित्रण हुआ है.

" कितनी तपस्विनी वे और माँ हैं उनकी
तुलना कहीं भी नहीं दीखती है जिनकी -
रुप,वर्ण, विद्या,बुद्धि,शील और गुणमें;. " [2]

सखी उसके हृदय के भाव समझ जाती है -

" भोली,आप भूल कर मुझको भुला न यों ।
मानती हूँ, और हरि योग्य वर तेरे ही,
तू भी है उन्हीं के योग्य, तुझको बधाई है । " [3]

यह सुनते ही विष्णुप्रिया के हृदय में प्रथम-प्रणय की हूक जागृत हो उठी-

" हाय, सखि, तूने यह क्या कर दिया अभी,
कैसी एक हूक-सी उठा दी इस उर में । " [4]

वात्सल्य रस - इस काव्य में बालक चैतन्य के क्रीड़ा-कौतुक से वात्सल्य रस की नियोजना हुई है जैसे--

" नित्य नये कौतुक- से होने लगे घर में,
चकित चमत्कृत थे माता-पिता देख के ।
शिशु की चपलता के ऊपरी उलहने,
सहते यशोदानन्द- से रीझ-खीझ के । " [5]

---

1. विष्णुप्रिया, पृ. 10
2. वही, पृ. 15
3. वही, पृ. 18
4. वही. पृ. 17
5. वही. पृ. 11

360

करुण रस -

" देव, यह क्या कह चले तुम,
और भी कुछ दिन रहूँ मैं ?
जब तुम्हीं सुनते नहीं तब,
और किससे क्या कहूँ मैं ?
चिर विरह था प्रथम ही अब
इस दहन से भी दहूँ मैं,
मृत्यु- मान न पा सकी,
अपमान जीवन का सहूँ मैं । " [1]

प्रिय की मृत्यु होने से शोक स्थायी भाव रस में परिणत हुआ है.

रत्नावली- पति के गृहत्याग के पश्चात् रत्नावली पति का स्मरण करती है. और उनके वियोग में व्यथित होती है-

वियोग श्रृंगार -

" क्षण-क्षण आती है स्मरण तुम्हारी ममता,
उसमें रखने की रखा न सकी मैं क्षमता ।
हा ! इसीलिए यह ज्वलित वियोग विषमता,
वह योग कहाँ अब ? रही नहीं जब समता ।
पर आज बहुत क्या एक तुम्हारी पाती ?
तुम हुए राम-रत, कहीं सुन पाती । " [2]

" क्यों नहीं रहते मुँदे ही पलक ?।
आँख मुँदने में तुम्हारी दीखती है झलक ।
देखते हो तुम मुझे झुक झाँककर लुक ललक,
चौंकती हूँ और आँसू ढलकते है छलक । " [3]

---

1. विष्णुप्रिया, पृ. 135
2. रत्नावली, पृ. 29
3. वही, पृ. 59

बिम्ब विधान
==========

शकुन्तला - घन से चन्द्र निकलते ही प्रकाश फैल जाता है वैसेही घूँघट के हट जाने से उसका चन्द्र सा मुख ने सर्वत्र उजियाला फैला दिया.

" अहा ! चन्द्र- सा निकला घन से,
फैल गया उजियाला । " [1]

सर्वदमन का बिम्ब इस प्रकार अंकित किया गया है --

" खिला हुआ मुख कंज मंजु दशनावली,
अरुण अधर, कलकण्ठ तोतली काकली ।
कोमल केश कलाप, धन्य विधु चातुरी,
मुग्ध हुए नृप देख बाल छबि- माधुरी ।
धारे अनुपम चक्रवर्ति- चिह्नावली,
कश्यप कृत संस्कार, सार्थनामा, बली । " [2]

पत्रावली - " पत्रावली " में चातक एवं महाराणा प्रताप का सुंदर बिम्ब प्रस्तुत हैं. जैसे चातक प्यास से तड़पकर अपनी मर्यादा को त्यागने के लिए तैयार हो जाता है वैसे ही महाराना प्रताप भी दैन्य एवं भूख से तड़पते हुए बालकों को देखकर सन्धि करने के लिए तैयार हो जाता है.

" निदाघ- ज्वाला से विचलित हुआ चातक अभी,
भुलाने जाता था निज विमल- वंश व्रत सभी ।
अहा ! ऐसे ही में जलद सुख का सत्र पहुँचा,
अहो पृथ्वीराज प्रियवर ! कृपापत्र पहुँचा । " [3]

यशोधरा - निम्न पंक्तियों में " आँचल का दूध " का प्रयोग " वात्सल्य के लिए हुआ है और " आँखों का पानी " विरह के लिए. जिससे यहाँ

---

1. शकुन्तला, पृ. 38

2. वही, पृ. 56

3. पत्रावली, पृ. 8

362

सुन्दर बिम्ब विधान हुआ है.

" अबला- जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी-
आँचल में है दूध और आँखों में पानी ।। " [1]

कवि ने ध्वनि- चित्रण के द्वारा प्रभावशाली बिम्ब प्रस्तुत किया है. जैसे -

" हर जटा की घन-घटा का यह घरर घर्घर नहीं है,
मधुर मर्मर से अधिक क्या यह चरर-चर्मर नहीं है ?
हरि कहूँ वा विधि, झरित क्या सुरसरित झर झर नहीं है ?
प्रकट धन्वन्तरि चला क्या अमृत-घट भर भर नहीं है । " [2]

" कर्बला " क्षेत्र का वर्णन करते हुए कवि ने प्रकृति का बिम्ब प्रस्तुत किया है -

" उनके पीछे भरा फरात नदी का जल है,
खेद बहाता आप मरुस्थल ताप-विकल है ।
मरीचिका ही दूर दूर है दृष्टि लुभाती,
किरण किरण है यहाँ कनी की अनी चुभाती । " [3]

निम्न पद्य में अमूर्त के लिए मूर्त बिम्ब द्रष्टव्य है -

" करुणा हुई थी अब अन्तर्मुखी दोनों की ।
सोख यथा वृष्टि धारा भूमि भर लेती है । " [4]

पुत्री को चिन्ता की मूर्ति एवं माता को भक्ति की मूर्ति कहा गया है-

" पुत्री मूर्तिमती चिन्ता-सी
होती है प्रति गेह की,

---

1. यशोधरा, पृ. 52
2. कुणाल-गीत, पृ. 77
3. काबा और कर्बला, पृ. 81
4. विष्णुप्रिया, पृ. 107

पर मैं पुतली थी माता के
और पिता के स्नेह की ।
माता भक्ति- मूर्ति थी मेरी
पिता ज्ञान के रुप थे । " [1]

अलंकार विधान
============

उत्प्रेक्षा- " जीवन की धारा थी मानो
मज्जु मालिनी की धारा । " [2]

भ्रान्ति (सन्देह)
" पुष्प-राशि- समान उसकी देख पावन कान्ति -
भूप की होने लगी जंगम-लता की भ्रान्ति -
क्या मनोमिष से उन्हींके जानकर अरविन्द -
घूमता था वर वदन पर एक मुग्ध मिलिन्द । " [3]

विभावना- " सुना होकर भी शरीर उसका आभूषणों से अहा !
दूना दर्शन योग्य, भूषण विना, सौन्दर्य था पा रहा । " [4]

अर्थान्तरन्यास -
बोले नृप- " होता है यों ही
विषयिजनों का मरना,
मुझे स-वंश चाहती है यों
तू यों दूषित करना ?
मर्यादा को छोड़ नदी जो
है तट- विटपि गिराती-

---

1. रत्नावली, पृ. 9
2. शकुन्तला, पृ. 9
3. वही, पृ. 15
4. वही, पृ. 26

वह अपना पानी बिगाड़कर

छबि-हीना हो जाती ।"[1]

उपमा- "मुझे भी औरों के सदृश वह दासत्व सहके,

पड़ेगा जीना क्या पशु-सम पराधीन रहके ।"[2]

"पापात्मा शिशुपाल- सा पवन है, मैं रुक्मिणी- सी फँसी,

मेरे कृष्ण ! तुम्हीं, सवेग सुध लो, होने न पावे हँसी ।।"[3]

अनुप्रास- "लट पट चरण, चाल अटपटी-सी मनभाई है मेरे"[4]

सांगरूपक - "निशि की अँधेरी जवनिके, चुप चेतना जब सो रही,

नेपथ्य में तेरे, न जाने, कौन सज्जा हो रही !

मेरी नियति नक्षत्र-मय ये बीज अब भी बो रही,

मैं भार फल की भावना का व्यर्थ ही क्यों ढो रही ?"[5]

उल्लेख- "सिंहनी-सी काननों में, योगिनी-सी शैलों में,

शफरी-सी जल में, विहंगिनी-सी व्योम में ."[6]

मानवीकरण "बोल युवक, क्या इसीलिए है

यह यौवन अनमोल हाय !

आकर इसके दाँत तोड़ दे

जरा भंग कर अंग-काय ?"[7]

---

1. शकुन्तला, पृ. 40
2. पत्रावली, पृ. 9
3. वही, पृ. 32
4. यशोधरा, पृ. 54
5. वही, पृ. 68
6. वही, पृ. 124
7. वही, पृ. 16

" पंछी चुगना छोड़ हुए ज्यों अन्यमनस्क उदास,
फीका ज्यों पड़ गया आप ही सान्ध्य गगन का हास ।"[1]

उपमा- " लोक में करुणा नदी- सी तुम बहो ।
ग्राम में तुम पौर लक्ष्मी-सी रहो । "[2]

" लौट पड़ी सिंह-सी साध्वी, बना रुप विकराल "[3]

सहोक्ति - " झाँक झरोखे से, उठ देखा- एक तरुण विक्रान्त,
अश्व- सहित घर्मित कलेवर अरुण वदन अतिश्रान्त । "[4]

विनोक्ति - " पर कुछ दिये बिना लेने का
है किसको अधिकार ? "[5]

सहोक्ति - " रात रहते ही उठ झाड़ घर, भृत्य के
रहते हुए भी, स्वयं सेवा कर गाय की,
सास संग जाती बहू गंगास्नान करके । "[6]

यमक- " छाया भी छाया नहीं छोड़ती तरु की
प्रिय, तप की तृष्णा तृप्त करोगे कैसे ? "[7]

" पैर न धरती थी धरती पर
मैं अपने आह्लाद में । "[8]

---

1. कुणाल-गीत, पृ. 131
2. वही, पृ. 84
3. काबा और कर्बला, पृ. 55
4. वही, पृ. 54
5. विष्णुप्रिया, पृ. 66
6. वही, पृ. 68
7. रत्नावली, पृ. 37
8. वही, पृ. 14

366

उत्प्रेक्षा- " उसने भी मेरा सिर सूँघा
निज नथनों की ब्यार से ।
मानो मैं भी वत्सतरी हूँ,
पसवाई वह वत्सला । " [1]

छन्द विधान

शकुन्तला-
" शकुन्तला " में कवि ने कुण्डलिया, पीयूषवर्ष का युग्मक, तिलोकी, दिग्पाल आदि छन्दों का प्रयोग किया है.

" दिग्पाल " छन्द 24 मात्रा का छंद हैं. इसकी 12, 12 मात्रा पर यति पड़ती है. इस छंद की पाँचवीं, आठवीं, सत्रहवीं और बीसवीं मात्रा लघु होती है.

" पाकर उसे अचानक झट जाग-से पड़े वे,
सुध आ गई प्रिया की, व्याकुल हुए बड़े वे ।
तत्क्षण शकुन्तला का वह त्याग याद आया,
गम्भीर शोक छाया अनुराग याद आया । " [2]

" पत्रावली " में कवि ने इन्द्रवज्रा, शिखरिणी, स्त्रग्धरा आदि छैदों का प्रयोग किया है.

" शिखरिणी " 17 अक्षर का छन्द है. वह छन्द में यगण, भगण, नगण, सगण, भगण और लघु गुरु रहते हैं. इसके 6, 6, 5 वर्ण पर यति पड़ती है. प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 6, 11 अक्षर पर यति पडती है.

" यही आकांक्षा है जबतक रहूँ देह-रथ में,
किसी भी बाधा से विचलित न होऊँ स्वपथ में ।
जिसे आत्मा चाहे सतत उसका साधन करूँ,
उसीकी चिन्ता में रहकर सदा चिन्तित मरूँ । " [3]

1. रत्नावली, पृ. 12
2. शकुन्तला, पृ. 44
3. पत्रावली, पृ. 11

" यशोधरा " में गीतिका, हरिगीतिका, ताटंक, रोला, वीर, आर्या, घनाक्षरी, उत्तर-चरणाई, कवित्त, सवैया आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है. कवि ने " यशोधरा " के " सन्धान " में अतुकान्त छन्द का प्रयोग किया है.

गीतिका- हरिगीतिका छन्द में 28 मात्राएँ होती हैं एवं इसकी पाँचवीं, बारहवीं, उन्नीसवीं और छब्बीसवीं मात्रा लघु होती है. इस छंद की प्रथम मात्रा गुरु या 2 मात्राओं को कम करने से " गीतिका " छन्द बनता है. " इसे हिन्दी में " गीतिका " छन्द कहते हैं, जो हरिगीतिका में प्रथम गुरु या 2 मात्राओं को कम करने से बनता है " [1]

" तात, पैतृक दाय दो, निजशील सिखलाओ मुझे,
प्रणत, हूँ मैं इन पदों में, मार्ग दिखलाओ मुझे,
असत से सत में, तिमिर से ज्योति में लाओ मुझे,
मृत्यु से तुम अमृत में हे पूज्य पहुँचाओ मुझे । " [2]

" कुणाल-गीत " के निम्न उदाहरण में चौपाई एवं हरिगीतिका का मिश्रण है-

" व्यथा--वरण करके रोना क्या ?
अपना धीरज-धन अपने ही हाथों से खोना क्या ?
क्लेश नाम से ही कर्कश है,
किन्तु सहन तो अपने वश है ।
भीतर रस रहते बाहर के विष के बस होना क्या ? " [3]

" काबा और कर्बला " के " काबा " खण्ड में चौपाई छन्द का प्रयोग हुआ है. इस छंद में सममात्रिक प्रवाह होता है. इसके अंत में गुरु-

---

1. आधुनिक हिन्दी काव्य में छन्द-योजना - पुत्तूलाल शुक्ल, पृ. 110
2. यशोधरा ,पृ. 143
3. कुणाल-गीत, पृ. 59

368

लघु रहता है.

एक अनुगत ने कहा सखेद-

" हाय ! हजरत, इसमें क्या भेद,

मुकुट जिनके पद चूमें चाप,

सियें वे अपने जूते आप । " [1]

" कर्बला " में विष्णुपद, सुमेरु, तिलोकी, सरसी, पीयूषवर्ष के युग्मक, रोला आदि छन्दों का प्रयोग हुआ है.

" विष्णु पद " छन्द 26 मात्राओं का छन्द है. इसमें सोलह मात्राओं के बाद यति पड़ती है. एवं अंत में गुरु रहता है. अंतिम दस मात्राएँ 4 + 3 + 3 या 4 + 4 + 2 या 3 + 3 + 4 के क्रम से आती हैं. यहाँ 4 + 3 + 3 का प्रयोग हुआ है.

रोला छन्द में 11, 13 मात्रा पर यति पड़ती है. इसके चरण में दो गुरु रहते हैं. इसके अंत में चार लघु या भगण (ऽ । ।) या सगण (। । ऽ) का भी प्रयोग मिलता है .

" राम जिसे मिले जाय, उसे मोहे क्या माया ?

पाकर ऐसा पुरुष क्या नहीं किसने पाया ?

ईसा, मूसा और मुहम्मद- सा जो आया,

समय समय पर एक एक संदेसा ही वह लाया । " [2]

" विष्णुप्रिया " में वैसे तो कवि ने अतुकान्त छन्द का प्रयोग किया है. फिरभी इसमें चौपाई, पादाकुलक जैसे प्रसिद्ध छन्द भी है.

अतुकान्त छन्द में 15 वर्ण होते हैं. यह छन्द आठ, सात वर्णों पर विराम लेता है.

" आये एक शास्त्री नवद्वीप जय करने

आगे बढ़ आप नवयुवक निमाई ने

---

1. काबा और कर्बला, पृ. 31

2. वही, पृ. 65

उनको निरस्त्र किया और गर्व उनका

गौरव बनाकर प्रदान किया वृद्धों को । "[1]

चौपाई के प्रत्येक पाद में 16 मात्राएँ होती हैं. इसके अंत में जगण॥ ।ऽ।॥ अथवा तगण ॥ ऽऽ। ॥ रखने का निषेध है. इसमें चतुष्कल का कोई नियम नहीं है. लय की रुचिरता के लिए समकल के बाद समकल एवं विषमकल के बाद विषमकल आना चाहिए .

" भरी गोद ही होती मेरी

तो रीते दिन सह लेती मैं.

तिनके का भी कहाँ सहारा

जिसके बल पर बह लेती मैं । "[2]

रत्नावली- इसमें हरिगीतिका, गीतिका आदि छन्द प्रयुक्त हुए हैं. हरि-गीतिका छन्द में 16, 12 पर यति पड़ती है. इस छन्द की छठीं, सातवीं, आठवीं, इक्कीसवीं, बाईसवी, तेइसवीं मात्रा का क्रम ।ऽ। नहीं होना चाहिए.

" साधु शिशिर, क्या फूल और फल, दल तक तुमने त्यागे,

तुम्हीं बता दो, किन्तु शेष क्या है अब मेरे आगे ?

मुझे काटता है जीवन ही, जब जब बल से भागे,

किन्तु तुम्हारे ही हिम- तप से मधु- माधव हैं जागे । "[3]

गीतिका छन्द के प्रत्येक पाद में 26 मात्रा होती हैं. 14-12 पर यति पड़ती है. अंतमें लघु- गुरु ॥।ऽ॥ वर्ण रहते हैं.

" दूत तुझको मैं बनाऊँ , शक्ति वह मुझमें कहाँ ?

किन्तु तू ही सोच, मैं दयनीय कितनी हूँ यहाँ ।

टूटती तेरी प्रिया तुझसे बिछुड़ती है जहाँ,

तो निहोरे तू उसीके मेघ, जा कृपया वहाँ । "[4]

---

1. विष्णुप्रिया, पृ. 14

2. वही, पृ. 50

3. रत्नावली, पृ. 35

4. वही, पृ. 41